## Dr. Madhukarrao Wasnik

## PWS Arts and Commerce College

**Kamptee Road, Nagpur-26**

# Chapters in Book

| Sr No | Title of the Article | Name of the Author | Title of the Book & ISBN | Publisher | Year of the Publication |
|---|---|---|---|---|---|
| **1.** | Loksahitya: Swarup Evam Visheshjataye | Dr. Sumedh nNgdewe | Loksahitya Ke Vividh Aayam<br><br>ISBN :987-93-85476043-3 | Aman Prakashan, Kanpur (UP) | 2017 |
| **2.** | P WS Mahavidyalay: Uttar Nagpur me Shaikshanik Kranti | Dr.Sumedh Nagdewe | Pragya Path: (Sovenir of Golden jubilee of Dr. MWPWS Arts and Commerce College, Nagpur<br>ISBN: 978-81-926293-5-3 | Principal, Dr. MWPWS Arts and Commerce College, Nagpur | 2019 |
| **3.** | Rishto Ka Man hi Nahi Rakhate, Shiddat se Nibhate bhi hai | Dr. Sumedh Nagdewe | Dr. Mithilesh Awasthi: Srushti evam DrushtiI<br><br>SBN: 978-93-86248-94-7 | Vidya Prakashan, Kanpur (UP) | 2019 |
| **4.** | Sahitya Me Rashtriy Chintan | Dr. Sumedh Nagdewe | Bharatiy Sahitya Chintan aur Chunoutiya<br><br>ISBN 978-93-88130-16-5 | A R. Publishing Company, Delhi-32 | 2019 |
| **5.** | Bharatiy Sahitya Aur Bharatiyata | | Bharatiy Sahitya Aur Anuwad978-93-91119-35-5 | Vanya Publication, Kanpur | 2021 |

**Principal**

**Dr. Yeshwant Patil**

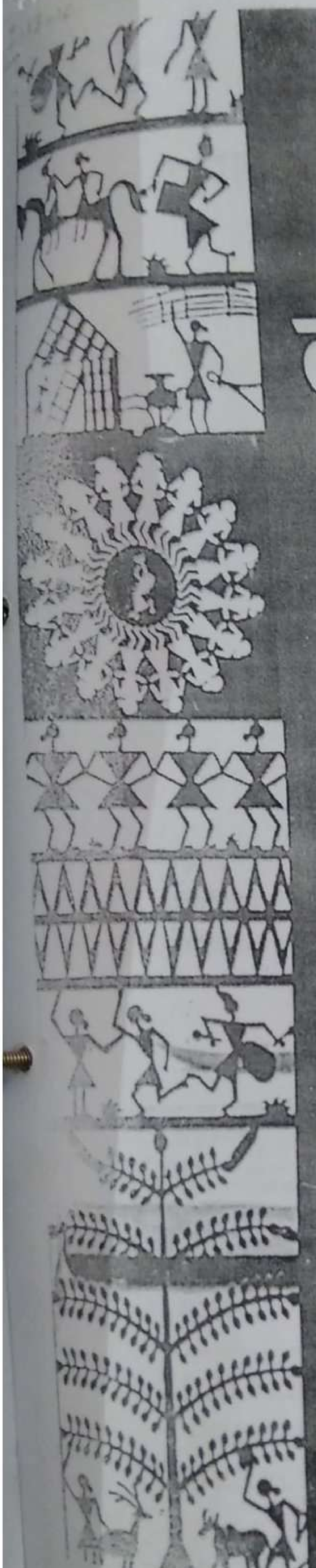

# लोकसाहित्य के विविध आयाम

संपादक

वीणा दाढे

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

# लोकसाहित्य के विविध आयाम

संपादिका

वीणा दाढे

अमन प्रकाशन, कानपुर

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-93-85476-43-3

पुस्तक : लोकसाहित्य के विविध आयाम
संपादिका : वीणा दाढे
प्रकाशक : अमन प्रकाशन
104A/80C, रामबाग, कानपुर - 208012 (उ.प्र.)
Ph : 0512-2543480 (Off.), 0512-2543480 (Fax.)
Mob.- 09839218516, 08090453647
संस्करण : प्रथम, 2017 ई.
© : संपादिकाधीन
मूल्य : ₹ 395.00 मात्र
शब्द सज्जा : राज ग्राफिक्स, नौबस्ता, कानपुर
मुद्रक : साक्षी ऑफसेट, यशोदा नगर, कानपुर

---

LOKSAHITYA KE VIVIDH AAYAM

*Edited by Veena Dadhe*

Price . Rs. Three Hundred Ninty Five Only

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

# भूमिका

लोकसाहित्य, प्राचीन होते हुए भी आधुनिक प्रतीत होता है क्योंकि वह आज भी प्रासंगिक है। लोक कथाएँ, लोकगीत एवं लोकनाट्य में अभिव्यक्त संदेश हमारे आज के जीवन पर भी पूरी तरह से लागू होते है। भारतीय संस्कृति एवं लोकसाहित्य के बीच गहरा संबंध है। दरअसल लोकसाहित्य, हमारी संस्कृति के मूल्यवान दस्तावेज है।

प्रस्तुत पुस्तक में लोकसाहित्य के विविध पक्षों को समेटा गया है। लोकसाहित्य का आशय स्वरूप, महत्व एवं प्रासंगिकता पर केन्द्रित लेख इसमें संकलित किए गए हैं। इनके माध्यम से लोकसाहित्य को समझने एवं वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता की पड़ताल करना अधिक सुगम होगा।

इक्कीसवीं सदी के हिन्दी साहित्य की चर्चा करते हुए कहीं-न-कहीं लोकसाहित्य से उसका गहरा जुड़ाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आज हिन्दी साहित्य में जितने भी विमर्श चर्चा में है उनकी जड़े लोकसाहित्य में दिखाई देती है। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श अथवा परिस्थितिकीय विमर्श के संबंध में लोक साहित्य बहुत पहले से ही जागरूक रहा है।

लोकसाहित्य के इसी महत्व को देखते हुए देश भर के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी साहित्य के पाठयक्रम में लोकसाहित्य का अध्ययन अध्यापन हो रहा है। इस पुस्तक के माध्यम से पाठक लोकसाहित्य के विविध पक्षों एवं रूपों को एक ही जिल्द में पाकर सुखद पाठकीय संतोष का अनुभव करेंगे। अस्तु, सुधी पाठकों के समक्ष इस पुस्तक को रखते हुए मुझे बेहद प्रसन्नता हो रही हैं।

- वीणा दाढे
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी-विभाग
रा.तु.म.नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर



Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

# अनुक्रम


11

1. मिथक : काव्यमय कौमों के दस्तावेज –रमणिका गुप्ता 28
2. साहित्य में लोकतत्व और लोकतत्व में साहित्य – प्रो. यज्ञप्रसाद तिवारी 35
3. लोकसाहित्य : परम्परा और प्रयोग – डॉ. विनय कुमार पाठक 40
4. बांग्ला लोकसाहित्य : ग्राम्य सुख-दुख का आख्यान और क्रांतिकारी स्वदेश चेतना – आलोक भट्टाचार्य 52
5. लोकसंस्कृति का दर्पण : लोकविश्वास – डॉ. सुरेश माहेश्वरी 58
6. लोकसाहित्य : आशय एवं उपादेयता – वीणा दाढे 63
7. लोकसाहित्य : अवधारणा और स्वरूप – मनोज पाण्डेय 70
8. लोकगीत : अवधारणा और महत्व – प्रा. संतोष गिरहे 75
9. लोकोक्तियों की प्रासंगिकता : भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी के संदर्भ में – डॉ. सोनू जेसवानी 79
10. बाल लोकसाहित्य : हरियाणवी संदर्भ – डॉ. विजयकुमार वेदालंकार 91
11. सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षक–'लोकगीत' – डॉ. अलका पाण्डेय 98
12. कुँड़ुख लोकगीतों में त्यौहार – डॉ. इसाबेल लकड़ा 103
13. लोकगाथा भरथरी में इतिहास और कल्पना – डॉ. रामनारायण धुर्वे



Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

14. लोकगीत 'चैता' 111
– डॉ. इन्द्र बहादुर सिंह
15. छत्तीसगढ़ी लोक कथाओं में ऐतिहासिक सत्य 125
– ए. के. यदु
16. छत्तीसगढ़ी के लोकसुभाषित 134
– डॉ. जयश्री शुक्ल
17. आदिवासी लोकगीतों की विविध छटाएँ 144
– नीतू बघेल
18. लोकनाट्य : भारतीय सन्दर्भ 148
– वीरेन्द्र प्रताप
19. खड़ीबोली का लोकसाहित्य : लोक कथाओं का स्वरूप, उद्‌देश्य और उपयोगिता 153
– डॉ. सिंधु पाटील
20. लोकसाहित्य : स्वरूप एवं विशेषताएँ 157
– डॉ. सुमेध पी. नागदेवे
21. भारत में लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास 163
– पूजा धनराज झिलपे
24. लोकसाहित्य : प्रासंगिकता और चुनौतियाँ 169
– नवीनकुमार झरारीया
23. लोकसाहित्य : अध्ययन की परम्परा एवं चुनौतियाँ 173
– रेखा कठारे

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

डॉ० सुमेध पी. नागदेवे

# लोक साहित्य : स्वरूप एवं विशेषताएँ

जीवन के लिए जिस तरह निवास, वस्त्र, भोजन आवश्यक है, उसी तरह साहित्य निर्माण सभ्य मानव के लिए अनिवार्य है। "ज्ञान राशि के संचित कोष ही का नाम साहित्य है। सब तरह के भावों को प्रकट करने की योग्यता रखने वाली और निर्दोष होने पर भी यदि कोई भाषा अपना निज साहित्य नहीं रखती तो वह रूपवती भिखारिनी की तरह कदापि आदरणीय नहीं हो सकती, उसकी शोभा, उसकी श्रीसम्पन्नता, उसकी मान-मर्यादा उसके साहित्य पर ही अवलम्बित रहती है। जाति विशेष के उत्कर्षापकर्ष, उसके राजनैतिक घटना-चक्रों और राजनैतिक स्थितियों का प्रतिबिम्ब हमें उसके ग्रंथ साहित्य में मिलता है।"[1] ज्ञान विकास, धर्म और राजनीति की भाषा सदैव लोक भाषा ही होनी चाहिए।

मनुष्य जब असभ्य था, तभी वह सभ्य था। जब वह सभ्य हुआ, तभी वह असभ्य हुआ। उसके भीतर अहंकार का जन्म हुआ। उसी अहम में वह अपनी लोक परम्परा, संस्कृति, रीति-रिवाज अपने साहित्य से दूर हुआ। आधुनिकता के मद में वह अपने लोक साहित्य से दूर हुआ। जिससे उसका नैतिक पतन होने लगा। जबकि किसी भी समाज या समुदाय का लोक साहित्य उसकी संस्कृति को अभिव्यक्त करता है। भारत में भी लोक-साहित्य की परम्परा हमारी संस्कृति के साथ पुष्पित-पल्लवित हुई हैं। ऋग्वेद में उल्लेखित गाथाएँ ही लोक साहित्य का आदिम रूप है। "ऋग्वेद" में लिखा है-

'प्रकृतान्य जीवंण : कथा इंद्रस्य गाथाया। मदे सोमस्य बोचत।' यहाँ 'गाथा' शब्द गीत के लिए प्रयोग किया गया है। प्राचीन काल में राजा के सत्कार्य, शौर्य को लक्षित कर जन सामान्य द्वारा गीत गाया जाता था वे ही गाथा कहलाते थे।"[2] वाल्मीकि कृत रामायण में राम विवाह के अवसर पर मंगल गीत गाने का उल्लेख किया गया है। "मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म भले ही राज परिवार में हुआ किंतु उनके जीवन काल का जो वर्णन सामान्य व्यक्ति को उपलब्ध है वह समाज के साधारण से साधारण व्यक्ति से जुड़ा है। बाल्यकाल में विश्वामित्र राम को लक्ष्मण सहित वन में ले गए। उनका वनवास का जीवन, भील, केवट, निषाद, किरात, वानर

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

या भालू जनपद के बीच बीता। दोनों ही एक दूसरे के संपर्क से कृतकृत्य हुए। आज भी भारत इसी उपेक्षित समाज को संगठित कर इसके आर्थिक और शैक्षिक उत्थान में जुटा हुआ है। इसी समाज ने राम को अवतारी पुरुष मानते हुए भी अपने परिवार का सदस्य माना है, परिणाम स्वरूप लोक के राम लोकगीतों में समाहित हो गए हैं।

'राम' सुमरनी चादर पर उभरा यह नया फूल प्रत्येक व्यक्ति के भीतर अपनी सुगंध बिखेरता है। वह अपने मन की गहराइयों, सांसारिक व्यवहारों, भौतिक वस्तुओं की सारता और निःसारता के दर्शन कराता है। राम तत्व चिंतन की दर्शन का एक साकार रूप है।

डॉ. सत्येंद्र के अनुसार–"लोक साहित्य के अंतर्गत वह समस्त बोली या भाषागत अभिव्यक्ति आती है जिसमें–

1. आदिम मानस के अवशेष उपलब्ध हों।
2. परम्परागत मौखिक क्रम से उपलब्ध बोली या भाषागत अभिव्यक्ति हो, जिसे किसी की कृति न कहा जा सके, जिसे श्रुति ही माना जाता हो और जो लोक मानस की प्रवृत्ति में समायी हुई हो।
3. कृतित्व हो, किन्तु व्यक्तित्व के साथ सम्बन्ध रखते हुए भी लोक उसे अपने ही व्यक्तित्व की कृति स्वीकार करें।"[4]

स्पष्टत: अभिजात्य संस्कारों से दूर मानव मस्तिष्क की सीधी सरल अभिव्यक्ति ही लोक साहित्य है जो स्वयं लोकमानस को समेटे रहती है।

लोक साहित्य का क्षेत्र बड़ा व्यापक है इसके अंतर्गत किसी समुदाय की शिक्षा, संस्कार, आचार-विचार, रहन-सहन के अलावा सामाजिक, पारिवारिक, ऋतु-सम्बन्धी, कृषि, श्रम सम्बन्धी गीतों, कथाओं आदि के अतिरिक्त राजनीतिक एवं राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण गीत, कथाएँ भी आती हैं। इतना ही नहीं भक्तिपूर्ण गीत, भाभी देवर का हास-परिहास, भूत-प्रेत भगाने वाले 'पचरा' गीत हों या लोरियाँ, नित्य व्यवहार में आने वाली कहावतें, लोकोक्तियाँ, मुहावरे आदि सभी लोक साहित्य के अंतर्गत आते हैं।

प्राचीन काल से ही साहित्य दो भागों में बँटा है, शिष्ट तथा अशिष्ट। इसका कारण संभवत: यह रहा होगा कि अभिजात्य वर्ग के लिए रचा गया शिष्ट साहित्य जन सामान्य तक नहीं पहुँच पाता था। राजाश्रित कवि गण राज दरबार की शोभा बढ़ाते थे। ऐसी स्थिति में जन सामान्य का मनोरंजन लोक साहित्य से होता था इसलिए लोक साहित्य का क्षेत्र विस्तृत हो गया। अत: उसके समग्र अध्ययन के लिए उसके वर्गीकरण की आवश्यकता है। लोक साहित्य के अंतर्गत निम्न विधाएँ प्रमुख हैं–

1. लोकगीत - स्वर और लय के आवरण में लिपटी जन सामान्य के हृदय की रागपूर्ण अभिव्यक्ति ही लोकगीत है। लोकगीत में लोकमानस की अभिव्यक्ति आवश्यक है। हमारी संस्कृति में उपासना गेय पद्धति में होती है। अत: लोकगीतों में



Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

उसकी छाप हमें दिखाई देती है। रामनवमी, जन्माष्टमी, नवरात्र, महाशिवरात्रि आदि त्योहारों में राम, कृष्ण, शिव, दुर्गा आदि देवी-देवताओं पर आधारित लोक गीत गाए गीत हैं। विभिन्न रीति-रिवाजों, परम्पराओं का वर्णन भरी लोकगीतों में किया गया है। "आज भी मुसलमान बहन अपनी संतान की शादी के समय भइया को भात लाने के लिए बुलाने जाती है तो यह लोकगीत गाती है," भैया रघुवीर भात हमार लाइयो. ... "इस मुसलमान बहन के होठों पर रघुवीर उसकी संस्कृति का शब्द है विधर्म का नहीं।"[5] अत: वह गीत जो लोकमानस की अभिव्यक्ति हो अथवा जिसमें लोकमानसाभास भी हो वह लोकगीत के अंतर्गत आएगा।

जब माताएँ नन्हें बालकों को थपकी देकर सुलाती है तब वह पालने के गीत गाती है। इसमें लय को महत्व दिया जाता है शब्दों को नहीं। उदा.

**"जसोदा हरि पालने झुलावै।**
**हलरावे, दुलरावै, मल्हावै जोई सोई कछु गावै।" ( सुरदास )**

यहाँ 'ज़ोई-सोई' शब्द इस गीत की आवश्यक शब्दावली का प्रतीक है। इन गीतों का लय, स्वर का उतार-चढ़ाव पालने के गति के अनुसार होता है।

बच्चों के बहुत से खेल गीतयुक्त होते हैं। भारत के प्रत्येक राज्य में विभिन्न प्रकार के खेल गीत गाए जाते हैं, जहाँ से उस क्षेत्र की लोक संस्कृति का पता चलता है। एक प्रमुख खेल इस प्रकार है–"कुछ लड़के-लड़कियाँ एक गोल घेरे में बैठ जाते हैं। एक बालक एक कपड़ा हाथ में लेकर उनके पीछे चारों तरफ घूमता है तथा सभी मिलकर गाते हैं।"

**"कोड़ा है जमाल साई पीछे देखे मार खाई,**
**मैं रस्ते में जाता था मेरी चिट्ठी खो गई।**
**किसी ने उठा ली डाक साहब को दे दी,**
**डाक साहब ने फाड़ फूड़ कर फेंक दी।"**

वह बालक बिना पीछे देखे उस कपड़े को पहचान कर उठा लेता है और कपड़ा डालने वाले बालक को कोड़े से मारता हुआ पीछे भागता है तथा चिल्लाता है–पकड़ो पकड़ो।

2. लोकगाथा - प्राय: लोकगाथा को लोकगीत का पर्यायवाची समझा जाता है परन्तु ऐसा नहीं है। लोकगाथा दीर्घ कथावस्तु की लोकभाषा में की गई संगीतात्मक अभिव्यक्ति है। लोकगीत गेयता प्रधान है कथानक प्रधान नहीं। जबकि लोकगाथा में गेयता से प्रधान दीर्घ कथानक होता है। महाराष्ट्र में इन लोकगाथाओं को 'पोवाड़ा' तथा 'तमासा' कहा जाता है, गुजरात में 'कथागीत', राजस्थान में–'गीत कथा' अंग्रेजी में इस प्रकार की गाथाएँ 'बैलेड' कहलाती है। लोक साहित्य में केंद्र बिन्दु लोक जीवन हाता है। जिसे साहित्यकार अपनी लोकानुभूतियों से ग्रहण करता है। जो ज्वलंत समस्याओं से सीधी जुड़ी होती है। रासों काव्य विभिन्न ज्वलंत समस्याओं का ज्ञान कराता है। 'आल्हा' नामक लोकगाथा में राष्ट्रीय चेतना का भाव

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

दिखाई देता है। 'पृथ्वीराज रासो' तथा 'आल्हा' दोनों ही वीरता तथा युद्ध का महत्व सिद्ध करते हैं।

"बारह बरस तक कूकुर जीवै,
तेरह बरस तक जियै सियार
बरस अठारह क्षत्रिय जीवै
ताके ऊपर है धिक्कार।"

ये पंक्तियाँ क्षत्रिय राजाओं की युद्धप्रियता भी घोषणा करती हैं। वीरगाथा में वह शक्ति होती है जो कायरों के भीतर भी वीर रस का संचार कराती है। बुंदेलखंड के बुंदेले हरबोलो द्वारा गाई 'झाँसी की रानी' की वीर गाथा आज भी 1857 की क्रांति की याद ताजा करा देती है। देश को एकता के सूत्र में बाँधने का कार्य लोकगाथाओं ने बखूबी किया है।

3. **लोकनाट्य** - नृत्य, गीत, संगीत से सुसज्जित कथा का लोकभाषा में अभिनय रूप लोकनाट्य है। लोकनाट्य प्राय: आडम्बरहीन खुले मंच पर बिना पर्दों के खेला जाता है। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में सरगुजा रियासत की पहाड़ी में 'सीता वैंगा' और 'जोगीभरा' गुफाओं में स्थित प्रेक्षा गृह प्राप्त हुआ है जो हमें उस काल के लोकनाट्य के विकास की जानकारी देता है। पतंजलि के 'महाभाष्य' में 'कंसवध' तथा 'अलिबंध' नाटकों के अभिनीत होने का वर्णन है। पाली ग्रंथों में भिक्षुओं के लिए नाटक देखना वर्जित था। मुगल शासन काल में यह परम्परा नष्ट हो गई थी। परन्तु भक्तिकाल में राम तथा कृष्ण पर आधारित रामलीला तथा रासलीला के रूप में पुन: जीवित हुई। लोकनाट्य का अलग-अलग क्षेत्र में अलग-अलग नाम है जैसे महाभारत में 'मॉच', हरियाणा में 'स्वॉग', आसाम की 'अंकिया', गुजरात का 'भवाई', महाराष्ट्र में 'तमासा', 'गोंधल', 'बहुरुपिया' आदि। लोकनाट्य में जनमानस के अनुकूल सरल तथा संक्षिप्त वाक्यों का प्रयोग होता है जिसका उद्देश्य नैतिक शिक्षा, जन-जागरण तथा मनोरंजन होता है।

4. **लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे** - लोक समाज में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति कहते हैं। केवल वही उक्ति लोकोक्ति के रूप में प्रयुक्त होती है जिसमें जीवनगत अनुभव को संक्षिप्त एवं विलक्षण ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। लोकोक्ति का आधार कोई कहानी या चिरसत्य होता है। ये पूर्णवाक्य होते हैं। इनके प्रयोग से भाषा का सौंदर्य पूर्ण, स्पष्ट तथा प्रभावशाली हो जाता है। लोकोक्तियाँ मनुष्य की व्यवहारकुशलता तथा अनुभव का प्रतीक हैं। लोकोक्तियाँ रसयुक्त सहज भाषा में कही गयी ऐसी सूक्तियाँ हैं जो अपने लघु रूप में ही विदग्धता, प्राणतत्व, अनुभव समेटे रहती हैं। इनका रचयिता अज्ञात ही रहता है। उदाहरण 'मुँह में राम, बगल में छुरी', 'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत', 'आम के आम गुठलियों के दाम।'



Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

काशी की विशेषताएँ निम्न लोकोक्ति में कितनी सहजता के साथ बताई गई

"राँड, साँड, सीढ़ी, सन्यासी इनसे बचे तो सेवे कासी।"[6]

मुहावरा शब्द मूलतः अरबी भाषा का है जिसका अर्थ 'अभ्यास' अथवा 'बातचीत' होता है। मुहावरे का अर्थ बोध अभिधा शक्ति से न होकर लक्षणा अथवा व्यंजना शक्ति से होता है। मुहावरा किसी अर्थ विशेष में रूढ़ हो जाता है इसलिए यह रूढ़ोक्ति भी कहलाता है। "जब कोई वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है तो उसे मुहावरा कहते हैं।"[7] मुहावरा वाक्य के भीतर ही व्यक्त होता है। इसके प्रयोग से भाषा जीवंत तथा प्रभावशाली बनती है। भाषा में सरसता, रोचकता, रंजकता, प्रवाह और लालित्य गुण आता है। हम यहाँ केवल क्षेत्र विशेष में प्रचलित मुहावरों की ही चर्चा कर रहे हैं।

उदा. : 'उल्लू' बोलना – उजाड़ स्थान का संकेत देता है।

'राम' नाम का प्रयोग कई मुहावरों में किया गया है।

उदा. : 'राम-राम करना', 'राम रूठना', 'राम लगना', 'राम खुलना' (आकाश से बादल छँटना), 'राम करना' (असाधारण घटना घटित होना), 'राम बुलावा' आदि।

**5. पहेलियाँ तथा ढकोसले** – पहेली ऐसी गूढ़ बात होती है जिसका निराकरण सहज नहीं होता है। पहेली मानव के मनोरंजन का एक साधन है, ये जनसामान्य में प्रचलित है।

उदा. 1. 'लाल घोड़ी खर खाय, पानी पियै मर जाय।' (अग्नि)

2. 'संध्या को पैदा हुई, आधी रात जवान,
बड़े सवेरे मर गई, घर हो गया मसान। (ओस)'

3. 'तुम उत्ते बड़े, हम इत्ते बड़े।
हमने छू लिया, तुम रो पड़े।' (बिच्छू)

पहेलियाँ मनोरंजन करती हैं वहीं ये मनुष्य में साम्य बैठाती है तथा विभेदीकरण की शक्ति का विकास भी करती है।

ढकोसले विशुद्ध रूप से मनोरंजन के लिए होता है। इसमें ऊटपटांग बातें ही होती है। अधिकतर नाटकों में विदूषक इनका प्रयोग करता है। हिन्दी में अमीर खुसरो के ढकोसले प्रसिद्ध हैं।

**"भैंस चढ़ी बबूल पर लप-लप गूलर खाय।"**

लोक-साहित्य के संदर्भ परिचयात्मक तथा स्वरूपगत विश्लेषण के पश्चात हम कह सकते हैं कि लोकसाहित्य की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।

लोक-साहित्य की विशेषताएँ-

1. रचयिता तथा रचना काल अज्ञात होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

2. सहज रूप में परिवेश का चित्रण किया जाता है। इसमें आवास व्यवस्था, भोज्य पदार्थ, वस्त्राभूषण, शृंगार प्रसाधन, गृहस्थी के उपकरण, वाहन, धार्मिक अनुष्ठान, पर्व-त्यौहार, विवाह की रीतियाँ, पशु-पक्षी आदि का चित्रण किया जाता है।
3. लोक साहित्य लोक मानस का पूर्ण एवं वास्तविक चित्र उकेरता है।
4. शिष्ट साहित्य के अलंकरणों से सर्वथा हीन होता है।
5. लोक साहित्य की प्रमुख विशेषता उसकी सरलता, सरसता तथा स्वाभाविकता है।
6. यह गीत, नृत्य, वाद्य अभिनय के लिए पूरा अवसर देता है।
7. यह समुदाय या जाति विशेष के रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार तथा संस्कारों की झाँकी प्रस्तुत करता है। उसकी संस्कृति को अभिव्यक्त करता है।
8. लोक साहित्य में प्रचार या उपदेश न होकर मनोरंजनार्थ सामग्री होती है।

लोक-साहित्य के स्वरूप एवं विशेषताओं के विवेचन के पश्चात निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि लोक साहित्य हमारी संस्कृति का परिचायक है जो जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है। वह आम जन-जीवन का दस्तावेज है परन्तु यह देखा जा रहा है कि आधुनिकता की होड़ में मनुष्य अपनी लोक संस्कृति से दूर होता जा रहा है वह इसे अशिष्ट साहित्य समझने की भूल कर रहा है, जिससे इसका उचित विकास नहीं हो पा रहा है। आज इसे संरक्षित करने हेतु विश्वविद्यालय स्तर पर कार्यशाला, सम्मेलनों के माध्यम से कई चर्चाएँ की जा रही हैं परन्तु यह कदम पर्याप्त नहीं हैं। अत: इसके विकास हेतु सरकार के सहयोग से योजनाबद्ध ढंग से कारगर प्रयास अपेक्षित हैं।

## संदर्भ सूची :


1. साहित्य की महत्ता, आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी, साहित्य संचय भाग-2,पृ.1
2. भारत निबंध पियूष, डॉ. दीपिका भारद्वाज, पृ. 94
3. राम कथा और लोक साहित्य, डॉ. जय नारायण कौशिक, भूमिका
4. भारत निबंध पियूष, डॉ. दीपिका भारद्वाज, पृ. 95
5. कितने पाकिस्तान, कमलेश्वर, पृ. 182
6. भारत निबंध पियूष, डॉ. दीपिका भारद्वाज, पृ. 98
7. पायोनियर मानक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, डॉ. अशोक कुमार उपाध्याय, पृ.246




Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

₹ 395/-

अमन प्रकाशन
104 ए/80 सी, रामबाग, कानपुर-208012 (उ.प्र.)
फ़ोन : 0512-2543480, (फैक्स) 0512-2543480
मो. : 08090453647, 09839218516
ईमेल : amanprakashan0512@gmail.com
वेबसाइट : www.amanprakashan.com

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

# सुवर्णमहोत्सव

50 Years Golden Jubilee

(१९६८-२०१८)

पीपल्स् वेलफेअर सोसायटी, नागपूर

# डॉ. मधुकरराव वासनिक पी.डब्ल्यू.एस. कला व वाणिज्य महाविद्यालय

टेका नाका, कामठी रोड, नागपूर.

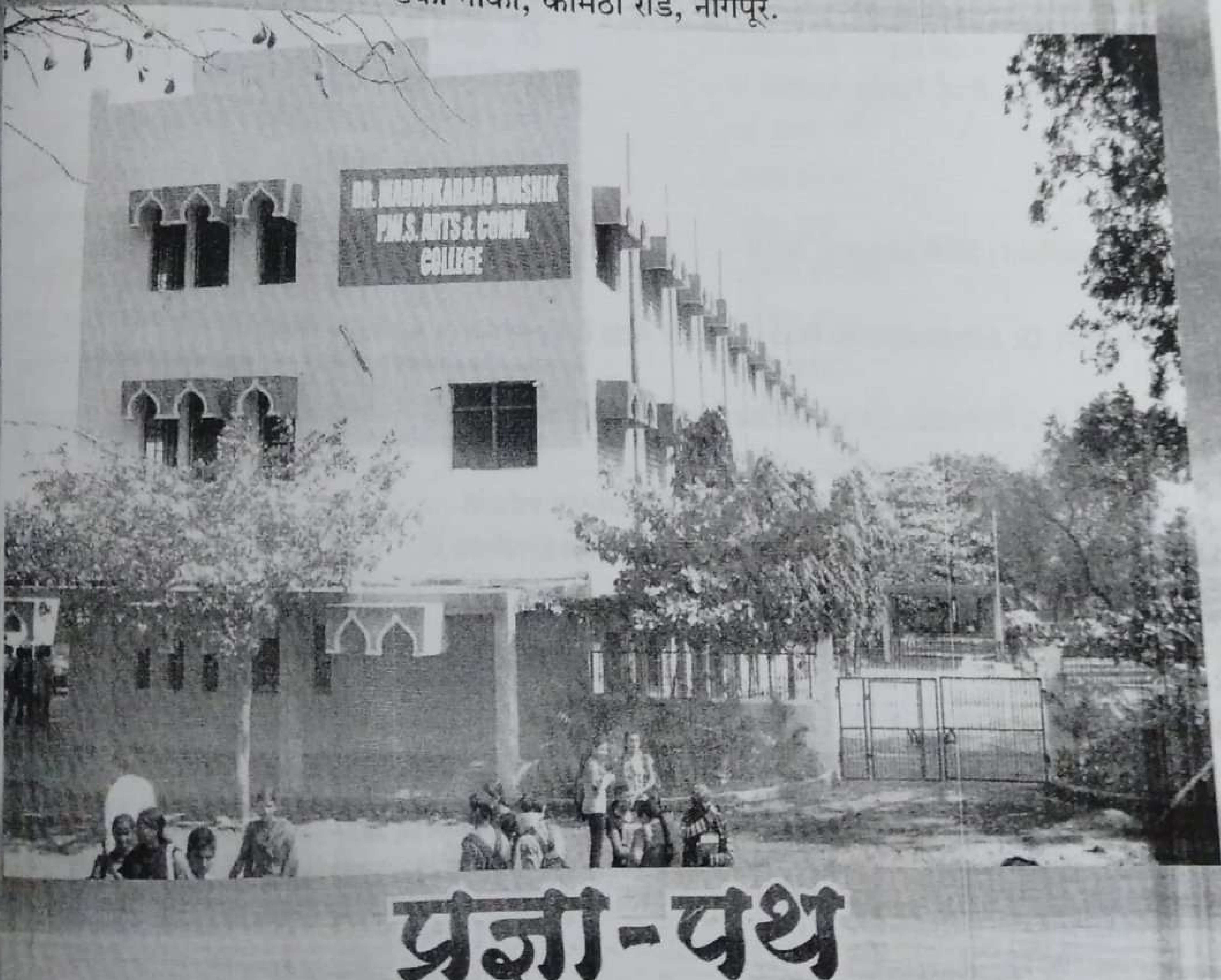


# प्रज्ञा-पथ

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

Pradnya-path/ प्रज्ञा-पथ
(A Souvenir of Jubilee Celebration of Dr. Madhukarrao Wasnik P.W.S. Arts and Commerce College, Nagpur-26.)


**Board of Editors**

Chief Editor
Sardar Atal Bahadur Singh

**Conveners**

Dr. Yeshwant Patil
Dr. Pradnya Bagade

**Members**

Dr. Indrajeet Orke
Dr. Mithilesh Awasthi
Dr. Sudesh Bhowate
Prof. Amol Mendhe
Dr. Sumedh Nagdeve
Prof. Mahesh Dudhe
Prof. Sandeep Ikhar
Prof. Kishor Warabhe
Prof. Pankaj Gosavi
Dr. Manisha Nagpure
Dr. Megha Ramteke
Dr. Amruta Dorlikar
Prof. Pranoti Sahare
Prof. Pratibha Pakhide
Prof. Saroj Vatte
Prof. Madhuri Kumbhare
Dr. Jwala Dohane
Prof. Ashwini Girade
Prof. Priti Gautam
Prof. Jagruti Singh



First Published : 29th January, 2019



©Principal, Dr. Madhukarrao Wasnik P.W.S. Arts & Commerce College, Nagpur-26.



Published by : Principal, Dr. Madhukarrao Wasnik P.W.S. Arts & Commerce College, Nagpur-26.

Contact : 0712-2655881, Website : www.pwscollege.edu.in

Email : principal@pwscollege.edu.in / principalpws@yahoo.in

Printed at : Mudrashilpa Offset Printers

ISBN - 978-81-926293-5-3



Disclaimer : The present souvenir 'Pradnya-path' contains articles submitted on the occasion of 50 years of Dr. Madhukarrao Wasnik P.W.S. Arts & Commerce College. Hence the souvenir or any part of it may not be reproduced in any other form without prior permission and information of the Principal. The Editor, Board of Editors and The Publisher may not agree with the views of the articles printed in this souvenir. The writers of the articles will be responsible for the authenticity of published matters in the souvenir.

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

# हिन्दी विभाग

## अंतरंग


| | | |
|---|---|---|
| १) उत्तर नागपुर की शैक्षणिक प्रगति में पी.डब्ल्यू.एस.कॉलेज की भूमिका | - प्रा. चंद्रशेखर पाटील | ७२ |
| २) शिक्षा में परिवर्तन विचार से नहीं, कृति से होना चाहिए | - डॉ. जयंत जांभुळकर | ७४ |
| ३) पी.डब्ल्यू.एस. महाविद्यालय : उत्तर नागपुर में शैक्षणिक क्रांति | - डॉ. सुमेध नागदेवे | ७६ |
| ४) व्यक्तित्व विकास एवं पी.डब्ल्यू.एस. कॉलेज | - प्रा. प्रीति गौतम | ७८ |
| ५) नयी पीढ़ी 'संघर्ष से समाधान' | - प्रा. रोमा दुर्गे | ८१ |
| ६) समाज एवं राष्ट्र के नव निर्माण में संस्था का योगदान | - प्रा. जागृति सिंह | ८२ |
| ७) महाविद्यालय से जुड़ी कुछ अनमोल यादें | - संतोष वालिया | ८४ |
| ८) मैं और मेरा कॉलेज | - महेश उईके | ८५ |
| ९) पी.डब्ल्यू.एस. महाविद्यालय मेरी नज़र में | - सुशील देशभ्रतार | ८६ |
| १०) मेरा श्रद्धा स्थान मेरा महाविद्यालय | - तोषिक राऊत | ८७ |
| ११) ज्योतिराव गोविंदराव फुले | - नेहा दाहाडे | ८७ |
| १२) मेरा महाविद्यालय मेरा अभिमान | - रूकाइय्या अली | ८८ |
| १३) मेरी नजर में पी.डब्ल्यू.एस कॉलेज | - मोईन सिद्दीकी | ९० |




Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

# पी.डब्ल्यू.एस. महाविद्यालय : उत्तर नागपुर में शैक्षणिक क्रांति

डॉ. सुमेध पानाचंद नागदेवे, (हिन्दी विभाग)

समाज के प्रत्येक व्यक्ति, वर्ग तथा समूह तक, प्रत्येक दलित, शोषित, पीड़ित तक शिक्षा पहुँच सके, यही डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का सपना था। इसी सपने को पूरा करने हेतु डॉ. मधुकरराव वासनिकजी ने 1968 में पी.डब्ल्यू.एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय की स्थापना की। उस समय उत्तर नागपुर सामाजिक तथा शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ था। इस क्षेत्र में उस समय कोई और महाविद्यालय नहीं था। इस बात को ध्यान में रखकर डॉ. मधुकरराव वासनिकजी ने 1967 में पीपल्स वेलफेअर सोसायटी की स्थापना की। इसी संस्था के अंतर्गत पी.डब्ल्यू.एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इंदोरा, नागपुर तथा 1984 में इंदिरा गांधी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, कळमेश्वर में ऐसे दो महाविद्यालय स्थापित किए। लोगों का सामाजिक तथा शैक्षणिक स्तर में सुधार हो यही इन महाविद्यालयों का उद्देश्य था। आरंभ में पी.डब्ल्यू.एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय छोटे से खपरैलनुमा भवन में इंदोरा चौक, नागपुर में स्थित था परंतु विद्यार्थियों की बढ़ती हुई संख्या तथा जगह की कमी के कारण इस महाविद्यालय को टेकानाका, कामठी मार्ग पर स्थानांतरित कर दिया गया। जहाँ इसे विशाल शैक्षणिक भवन का आकार दिया गया। जिस सोच, जिस नई दृष्टि से इस महाविद्यालय की स्थापना की गई वह अपने विकास की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है।

पीपल्स वेलफेअर सोसायटी के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. मधुकर वासनिक, जो कि पेशे से एक प्रसिद्ध डॉक्टर तथा पूर्व विधान परिषद सदस्य भी रहे हैं, हमेशा सभी को मार्गदर्शन देते है, सभी को प्रोत्साहित करते रहते हैं। महाविद्यालय की उन्नति हेतु वे हमेशा प्रयासरत रहते है। यह उनकी ही दृष्टि, उनकी ही नीतियों का परिणाम है कि इस महाविद्यालय ने छोटे से खपरैलनुमा भवन से आरंभ कर आज एक विशाल रूप ले लिया है। आज इस महाविद्यालय का अपना एक प्रशस्त प्रांगण है। इस प्रांगण में चारों ओर लगे वृक्षों के कारण वातावरण बेहद सुंदर और हराभरा है। वर्तमान में महाविद्यालय में बुद्धिस्ट स्टडी सेंटर, रिसर्च सेंटर, विशाल ग्रंथालय, भाषा प्रयोगशाला, खेल का मैदान, प्राध्यापकों के लिए स्टाफरूम, प्रत्येक विभाग के लिए अलग कक्ष आदि मौजूद है।

एन.एस.एस. विभाग के माध्यम से जनजागरण कार्यक्रम, रक्तदान शिबिर, रोगनिदान शिबिर, पर्यावरण संरक्षण आदि विविध कार्यक्रम लिए जाते हैं। पर्यावरण की रक्षा हेतु यह विभाग वृक्षारोपण के साथ ही उसका संगोपन भी करता है। आज संपूर्ण भारत में रक्त की कमी है, लाखों मरीजों को रक्त की आवश्यकता होती है। महाविद्यालय प्रतिवर्ष एन.एस.एस. विभाग की ओर से रक्तदान शिबिर का आयोजन कर अपने सामाजिक दायित्व को निभाता है। एन.एस.एस. शिबिर के माध्यम से, अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास के साथ-साथ सेवा भाव तथा सहयोग की भावना का निर्माण किया जाता है। क्रियात्मक तथा रचनात्मक कार्यों हेतु छात्रों को तैयार किया जाता है। इस विभाग का उद्देश्य ही राष्ट्रसेवक निर्माण करना है। ऐसे सेवक जो देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए।

रोजगार सेल की ओर से छात्रों को रोजगार के संबंध में मार्गदर्शन दिया जाता है। विविध कंपनियों को बुलाकर छात्रों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करता है। उनकी ओर से विविध स्पर्धात्मक परीक्षा की तैयारी के साथ ही परीक्षा का आयोजन भी किया जाता है। छात्रों को इस स्पर्धात्मक युग हेतु तैयार कर उनका सर्वांगीण विकास का प्रयास किया जाता है। वर्तमान में इस महाविद्यालय के छात्र विविध क्षेत्रों में कई बड़े-बड़े पदों पर विराजमान है। यह इस महाविद्यालय के लिए बडे गर्व की बात है। महाविद्यालय के द्वारा स्नातकोत्तर छात्रों को नेट/सेट के लिए तैयार किया जाता है। महाविद्यालयीन प्राध्यापकों द्वारा उन्हें मार्गदर्शन दिया जाता है।

सांस्कृतिक विभाग महाविद्यालय का एक महत्वपूर्ण विभाग है। जो छात्रों के कलात्मक गुणों को बाहर निकालकर



Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

उसे निखारकर मंच प्रदान करता है। प्रत्येक छात्र की योग्यता उसके कलात्मक गुणों के आधार पर चाहे वह लेखन कला हो या नृत्य-कला, गीत-गायन हो या नाटक-अभिनय सभी क्षेत्रों में छात्रों के भीतर रूचि उत्पन्न कर उसके सुप्त गुणों को बाहर निकालकर उसका डर समाप्त कर उसे निर्भय बनाया जाता है। छात्रों के भीतर आत्मविश्वास जगाता है। यही आत्म-विश्वास इस स्पर्धात्मक युग हेतु बेहद महत्वपूर्ण है जो छात्रों का भविष्य सँवारने में सहायक है।

महाविद्यालय विविध चर्चासत्र, बौद्धिक परिसंवाद, राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन करता है। विभिन्न क्षेत्रों के विविध विषयों के विशेषज्ञों को आमंत्रित कर छात्रों के ज्ञान को समृद्ध किया जाता है। छात्र उनसे प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा को शांत करते है। चर्चा सत्रों द्वारा छात्रों से संबंधित विषयों पर चिंतन मनन किया जाता है। परिसंवाद तथा संगोष्ठी के माध्यम से विविध शोध विषयों पर विचार मंथन किया जाता है। ऐसे सेमिनार छात्रों को शोधलेखन हेतु प्रेरित करते है।

महाविद्यालय की ओर से प्रतिवर्ष 'मैत्री' पत्रिका तथा "Perspective Research Magazine" का प्रकाशन किया जाता है। इस शोध पत्रिका में प्राध्यापकों के अलावा शोध छात्रों के भी शोध-पत्र प्रकाशित होते हैं। यह शोध-पत्र छात्रों में ज्ञानवृद्धि करता है। 'मैत्री' पत्रिका छात्रों के क्रियात्मक और रचनात्मक लेखन कौशल को निखारता है। उन्हें लेखन मंच प्रदान करता है। सभी प्राध्यापक छात्रों को लेखन हेतु प्रेरित करते है, उनके लेखन के सुधारते सँवारते हुए लेखन के संकेत बिंदू देते हैं। छात्र इस पत्रिका के माध्यम से अलग-अलग विषयों पर अपने विचार रखता है।जिससे एक वैचारिक वातावरण का निर्माण होता है। जो उनके व्यक्तित्व निर्माण, उनके विकास में सहायक होता है।

आर.टी.एम. नागपुर विद्यापीठ द्वारा महाविद्यालय को 2016-17 में शोध केंद्र प्राप्त हुआ है। जहाँ शोध छात्र चिंतन, मनन तथा पठन द्वारा अपने शोध को एक नई दिशा देता है। यहाँ का ग्रंथालय इतना समृद्ध है कि प्रत्येक विषय की पुस्तकें यहाँ मौजूद है। छात्र इन पुस्तकों अध्ययन कर, अपने विषय से संबंधित सामग्री एकत्रित करते हैं। छात्र ग्रंथालय के अध्ययन कक्ष में बैठकर अपने शोधकार्य को पूर्ण करते हैं। इस ग्रंथालय में प्रत्येक विषय के अनुसार पुस्तकें रखी गई है, जिससे कोई भी पुस्तक आसानी से ढूंढकर प्राप्त की जा सकती है। अतः छात्रों को पुस्तकों के लिए कहीं और जाने की आवश्यकता नहीं होती, वे अपना शोधकार्य तेज़ी से पूर्ण कर सकते हैं।

खेल विभाग के अंतर्गत आधुनिक जिम भी है, जहाँ छात्रगण व्यायाम करते हैं। इस खेल विभाग ने अनेक राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाडी तैयार किए है। कई स्पर्धाओं का विजेता यह महाविद्यालय कई स्पर्धाओं का आयोजक भी रहा है। इस विभाग में कदम रखते ही, वहाँ के पारितोषिक देखकर ही उसकी भव्यता का अहसास होता है। पूरे विश्वविद्यालय में इस विभाग का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। इस विभाग के प्राध्यापक स्वयं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाडी रहे हैं। वे महाविद्यालयीन छात्रों को उसी स्तर का खिलाड़ी बनाने के लिए प्रयासरत रहते हैं। उनके ही परिश्रम का परिणाम यह रहा कि महाविद्यालय ने देश को कई बेहतरीन खिलाड़ी दिए।

पालि विभाग, आंबेडकर विचारधारा, बुद्धिस्ट स्टडी सेंटर के कारण ही महाविद्यालय की अपनी अलग पहचान रही है। यह ऐसे विषय है जिनका अध्यापन बहुत कम स्थानों पर होता है। महाविद्यालय इन विषयों के माध्यम से आज भी अपनी संस्कृति को संजोए रखा है। प्राचीन भाषा के रूप में पालि का अपना महत्व रहा है। महात्मा बुद्ध के विचार, उनके उपदेश इसी भाषा में मौजूद है। आधुनिक भारत के शिल्पकार है, उनके विचार डॉ. आंबेडकर छात्रों को नई दिशा देते हैं। यह विषय, उनके विचार छात्रों का मार्ग प्रशस्त करता है यह विचार प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करता है। महाविद्यालय विविध कार्यक्रमों के माध्यम से आधुनिक भारत के निर्माता डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों को आत्मसात करते हुए उनके विचारों का प्रचार प्रसार भी करता है।

समाज की सेवा करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। महाविद्यालय इसी सेवा भाव को अपना दायित्व समझता है। इसी सेवा भाव को धारण करते हुए महाविद्यालय ने कामठी रोड स्थित 'कवठा' गाँव को गोद लिया है। यहाँ की जिला परिषद की प्राथमिक शाला में महाविद्यालय ने पुस्तकें



Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

आलमारी, कम्प्यूटर आदि चीजे दी। वहाँ के छात्रों के लिए बॅग, गणवेश आदि वस्तुएँ प्रदान की गई। प्राध्यापक वृंद भी प्रत्येक वर्ष अनाथ आश्रम, वृद्धाश्रम हेतु आर्थिक सहायता देता रहता है। जो छात्र किसी कारण वश अपनी परीक्षा फीस देने में असक्षम है ऐसे छात्रों की प्राध्यापक सहायता करता है। गरीब छात्रों को पुस्तकें प्रदान करता है। किसी ना किसी रूप से वे छात्रों की मदद करते रहते हैं।

महाविद्यालय में राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विद्यापीठ के बी.ए., बी. कॉम. सनतक स्नातकोत्तर अभ्यास क्रम का अध्ययन अध्यापन कराया जाता है। नोकरी पेशा लोगो की समस्याओं, उनकी कठिनाईयों को ध्यान में रखते हुए यशवंतराव चव्हान मुक्त विद्यापीठ के अभ्यासक्रम भी चलाए जाते हैं। इसके अलावा ज्युनियर कॉलेज में कला एवं वाणिज्य अभ्यासक्रम के साथ एम.सी.वी.सी. वोकेशनल अभ्यासक्रम भी पढ़ाया जाता है। लगभग 100 के आसपास शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारी मौजूद है। पीपल्स वेलफेअर सोसायटी के अंतर्गत ही 2015-16 में सी.बी.एस.सी. नागपुर पब्लिक स्कूल की भी स्थापना की गई। यह शाला नर्सरी से आरंभ होकर आज चौथी कक्षा तक पहुँची है, जिसकी विद्यार्थी संख्या लगभग 200 है। इन 50 वर्षों में पीपल्स वेलफेअर सोसायटी का निरंतर विकास हुआ। डॉ. मधुकरराव वासनिकजी ने जो शिक्षा का बीज बोया था, आज उसने वटवृक्ष का रूप धारण कर लिया है। महाविद्यालय के लिए यह बड़े गर्व की बात है कि निरंतर विकास के पथ पर चलते हुए कई कठिनाइयों को पार करते हुए इस महाविद्यालय ने अपना एक मुकाम हासिल करते हुए नॅक द्वारा बी ग्रेड प्राप्त किया है। व्यवस्थापन प्रबंधन के कुशल निर्देशन, प्राध्यापक तथा प्राध्यापकेत्तर कर्मचारियों की निष्ठा, कर्तव्य परायणता, सौहार्द्रपूर्णता इनके आपसी समन्वय तथा तालमेल के कारण महाविद्यालय निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। जो समाज की सोच को परिष्कृत कर, उसे शैक्षिक पथ की ओर ले जाने में मील का पत्थर साबित हुआ है।

ooo

# व्यक्तित्व विकास एवं पी.डब्ल्यू.एस. कॉलेज

प्रा. प्रीति गौतम (हिन्दी विभाग)

समाज ही एक इकाई को समग्र समाज से जोड़ने तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग को विकास के मुख्य प्रवाह से जोड़ने का अहम प्रयास करने वाले पी.डब्ल्यू.एस. महाविद्यालय का महत्व केवल उत्तर नागपुर के संदर्भ में ही नहीं नागपुर विद्यापीठ के परिप्रेक्ष्य में भी विशिष्ट हैं। मैंने पी.डब्ल्यू.एस. महाविद्यालय में अंशकालीन प्राध्यापिका के रूप में हिन्दी विभाग में सन २००४ से २००६ तक कार्य किया। जो मेरे जीवन का सुखद अनुभव है क्योंकि इसी महाविद्यालय में अध्यापन करने से मेरे भीतर का आत्मविश्वास जागा। मेरे मनोबल को बढ़ाने का श्रेय इस महाविद्यालय को ही जाता है। यहाँ का वातावरण मुझे एक परिवार की ही तरह लगने लगा।

मेरा यह अनुभव रहा कि पी.डब्ल्यू.एस. महाविद्यालय कामठी रोड, नागपुर सन १९६८ को स्थापित उत्तर नागपुर का सर्वप्रथम महाविद्यालय है। इस महाविद्यालय ने पिछड़े वर्ग को प्रगति के पथ पर पहुँचाने का प्रयास किया है। प्रत्येक वर्ग का बच्चा इस कॉलेज से शिक्षा प्राप्त करता आ रहा है और हर एक क्षेत्र में इस महाविद्यालय का नाम रोशन कर रहा हैं। विशेष तौर से यह देखा जाता है कि यहाँ जो भी बच्चा पढ़ने आता है वह निम्न व मध्यमवर्गीय परिवार से संबंध रखने वाला होता हैं। नागपुर के बाकी महाविद्यालयों से यदि तुलना की जाए तो पी.डब्ल्यू.एस. कॉलेज में ११ विषयों के पाठ्यक्रम एम.ए., एम.कॉम. (स्नातकोत्तर) संचालित किए जाते हैं। जो इस महाविद्यालय को गौरवान्वित करता है।

इस महाविद्यालय की कुछ बातें मेरे मन को भीतर तक द्रवित करती हैं जैसे इस महाविद्यालय के अधिकांश विद्यार्थियों के सामने उपस्थित आर्थिक संकट उनके जीवन को संघर्षो से भर देता है। इनसे निपटते हुए पढ़ाई करना एक बड़ी चुनौती होती है। यह भी सच है ये संघर्ष एवं चुनौतियाँ उनके भावी जीवन के लिए मजबूत



Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

# डॉ. मिथिलेश अवस्थी
# सृष्टि एवं दृष्टि

संपादक मंडल

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

# डॉ. मिथिलेश अवस्थी
## सृष्टि एवं दृष्टि

संपादक मण्डल

**संजय तिवारी**

(निवासी संपादक, दैनिक नवभारत, नागपुर)

डॉ. हरिशंकर द्विवेदी (होशंगाबाद)
डॉ. हेरराम पाठक (डिगबोई, असम)
डॉ. अशोक धुलधुले (नासिक)
डॉ. विजय गाडे (सांगली)
डॉ. सुमेध नागदेवे (नागपुर)
डॉ. बसंत त्रिपाठी (प्रयागराज)
डॉ. अशोक सभ्रवाल (चण्डीगढ)
डॉ. ईश्वर पवार (शिरूर)
डॉ. अनिल दुबे (वर्धा)
श्रीमती दीप्ति अवस्थी (नागपुर)

विद्या प्रकाशन
सी, 449, गुजैनी, कानपुर - 22

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

**ISBN : 978-93-86248-94-7**

| | | |
|---|---|---|
| पुस्तक | : | डॉ. मिथिलेश अवस्थी : सृष्टि एवं दृष्टि |
| संपादक | : | संजय तिवारी |
| प्रकाशक | : | **विद्या प्रकाशन** |
| | | सी-449, गुजैनी, कानपुर-22 |
| | | दूरभाष : (0512) 2285003 |
| | | मो० : 09415133173 |
| | | Website: www.vidyaprakashankanpur.com |
| | | E-mail : vidyaprakashan.knp@gmail.com |
| संस्करण | : | प्रथम 2019 |
| शब्द सज्जा | : | शिखा ग्राफिक्स, जूही, कानपुर |
| मुद्रक | : | श्री पूजा प्रिण्टर्स, नौबस्ता, कानपुर |
| मूल्य | : | ₹695/- |

---

**Dr. Mithilesh Awasthi : Srashti avam Drashti**

**Edited By : Sanjay Tiwari**

*Price : Six Hundred Ninety Five Only*

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

# अनुक्रमणिका


| | | | |
|---|---|---|---|
| 01 | अशेष आशीर्वाद... | डॉ. पद्मचंद जैन, अमरावती | 11-12 |
| 02 | मिथिलेश जी के साथ व्यतीत हुए अविस्मरणीय क्षण | डॉ. सतीशराज पुष्करणा, पटना | 13-21 |
| 03 | अंतरंग-क्षण | डॉ. एच.एस. द्विवेदी, होशंगाबाद | 22-23 |
| 04 | मैं खुशनसीब हूँ कि मुझे दादा जैसा मित्र मिला..... | डॉ. अशोक सभ्रवाल, चण्डीगढ़ | 24-27 |
| 05 | मिथिलेश अवस्थी : विनम्र प्रखरता की मूर्ति | डॉ.बसंत त्रिपाठी, प्रयागराज | 28-32 |
| 06 | भाग्य बदलने वाला प्रोफेसर | संजय तिवारी, नागपुर | 33-40 |
| 07 | बीस बरस का साथी : मिथिलेश अवस्थी | डॉ. हरेराम पाठक डिगबोई (असम) | 41-44 |
| 08 | साहित्य-मनीषी डॉ. मिथिलेश अवस्थी:व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व | डॉ. मेहता नगेंद्र सिंह, पटना | 45-50 |
| 09 | बड़े भाई - मिथिलेश! | डॉ. विजय महादेव गाडे, सांगली | 51-56 |
| 10 | डॉ. मिथिलेश अवस्थी : व्यक्ति और सृजनकार | प्रो.डॉ. अशोक धुलधुले, नासिक | 57-61 |
| 11 | चिन्तन के क्षणों के यात्री : डॉ. मिथिलेश अवस्थी | डॉ. मीनाक्षी जोशी, भंडारा | 62-65 |
| 12 | मित्रता की ज़मी के शम्स | डॉ. ईश्वर पवार, शिरूर | 66-69 |
| 13 | विद्या विनयेन शोभते | डॉ. ऋचा शर्मा, अहमदनगर | 70-71 |
| 14 | संवेदनाओं से लबालब भरा कविमन | प्रा. सूर्यकांत चव्हाण, लातूर | 72-74 |
| 15 | जो अच्छा है, वह सबका है | डॉ. आभा सिंह, नागपुर | 75-78 |
| 16 | 'सर' से कब 'बड़े भाई' बन गए, पता ही न चला... | उषा अग्रवाल, नागपुर | 79-81 |
| 17 | शिक्षाविद, सृजनशील, ज्ञानयोगी डॉ. मिथिलेश अवस्थी | डॉ. सुदेश मीरा-बलीराम भोवते नागपुर | 82-101 |


Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| | डॉ. मिथिलेश अवस्थी : सृष्टि एवं दृष्टि | | |
| 18 | मेरे बजरंगी भाईसाहब | नीलिमा पाठक, नागपुर | 102-109 |
| 19 | रिश्तों की पवित्रता और संवेदना की गहराई का अनूठा संगम | डॉ. मेघा रामटेके, नागपुर | 110-116 |
| 20 | डॉ. मिथिलेश अवस्थी | सनत कुमार जैन, जगदलपुर | 117-119 |
| 21 | मेरे मामा-हौसला, प्यार और विश्वास के प्रतिमान | अभिनव द्विवेदी, भोपाल | 120-122 |
| 22 | गुरुवर, जिन्होंने अपने भीतर के शिष्य को खत्म नहीं होने दिया | डॉ. ममता मेहता, अमरावती | 123-128 |
| 23 | डॉ. मिथिलेश अवस्थी : मित्रवत मार्गदर्शक | प्रा. आनंदमणि त्रिपाठी अहमदनगर | 129-130 |
| 24 | मेरे ज्येष्ठ भ्राता अवस्थी सर | डॉ. चंद्रशेखर पाटिल, नागपुर | 131-136 |
| 25 | मेरे महागुरु : डॉ. मिथिलेश अवस्थी | प्रा. निवृत्ति लोखंडे, अकलूज | 137-141 |
| 26 | रिश्तों का मान ही नहीं रखते, शिद्दत से निभाते भी हैं | प्रा. सुमेध पी. नागदेवे, नागपुर | 142-153 |
| 27 | सदाबहार व्यक्तित्व के धनी डॉ. मिथिलेश अवस्थी | डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर, पुणे | 154 |
| 28 | ज्वालामुखी को बना दिया ओस की बूंद | रेखा संजय तिवारी, नागपुर | 155-157 |
| 29 | प्रा. मिथिलेश अवस्थी : एक बहुआयामी जीवंत हस्ताक्षर | नरेंद्र परिहार, नागपुर | 158-160 |
| 30 | ईश्वर हमें निर्बल नहीं, सबल बनाता है:भैयाजी | मनोज अर्जुन सिंह, नागपुर | 161-173 |
| 31 | अपने शिक्षक के प्रति-मंतव्य | हितेन्द्र घोटेकर, पुणे | 174-177 |
| 32 | शील, प्रज्ञा, करुणा के धनी भ्राता अवस्थी जी | डॉ. सपना तिवारी, नागपुर | 178-182 |
| 33 | सिद्धांतवादी व उसूलों के पक्के अवस्थी सर | श्रीमती प्रीति विनोद गौतम नागपुर | 183-194 |
| 34 | सर से गुरु बन गए और गुरु से पापा | संतोष कौर वालिया (संधु) नागपुर | 195-205 |


Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| 35 | विपदा में और कोई चेहरा याद ही नहीं आता | प्रा. गोविंद त्रिवेदी आष्टी, खुर्द, नागपुर | 206-216 |
| 36 | मैंने उनमें वो चेहरे ढूँढ लिए जिनकी कभी तस्वीर भी नहीं देखी | हरनीत कौर सोखी (बिंद्रा) बल्लारपुर | 217-233 |
| 37 | जरूरी नहीं कि रक्त के संबंध ही पक्के होते हैं | सपना गायकवाड़, कामठी | 234-239 |
| 38 | सोचा भी नहीं था, ऐसा रिश्ता बन जाएगा | रुखसार इनायत अली, नागपुर | 240-242 |
| 39 | जिनसे सब कुछ सीखने के लिए एक जन्म भी कम लगता है | रोमा दुर्गे, नागपुर | 243-247 |
| 40 | अनमोल गुरु – मेरे बड़े पापा | आरिफा शबनम शेख, कामठी | 248-251 |
| 41 | जब गुरुजी डाँटते हैं तो लगता है कि पिता बोल रहे हैं | ऋषभ जैन, सलूम्बर, राजस्थान | 252-255 |
| 42 | अनुशासन, कर्म एवं प्रेम के प्रतीक- डॉ. अवस्थी सर | मोइन सिद्दीकी, नागपुर | 256-260 |
| 43 | संघर्ष के बाद भी कर्तव्य में कमजोर नहीं पड़े *(अम्माजी की नज़र में भैया जी)* | जागृति मनोज सिंह, नागपुर | 261-274 |
| 44 | अनुशासनात्मक व्यवहार ही जीवन-शैली है *(बड़े भाई 'दादा' कौशल अवस्थी से सहज संवाद)* | प्रा. सुमेध पी. नागदेवे, नागपुर | 275-282 |
| 45 | मैंने हमेशा मनुष्यता को सर्वोपरि रखा है *(डॉ. मिथिलेश अवस्थी से सीधी बातचीत)* | डॉ. अनिल कुमार दुबे, वर्धा | 283-296 |
| 46 | डॉ. मिथिलेश अवस्थी की कृतियाँ | | 297-312 |


Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

# रिश्तों का मान ही नहीं रखते, शिद्दत से निभाते भी हैं

–प्रा. सुमेध पानाचंद नागदेवे

वर्तमान समय में जहाँ मनुष्य की मनुष्यता समाप्त हो रही है, उसके मूल्य, सिद्धांत कहीं खो रहे हैं, नैतिकता, सदाचार, परोपकार कहीं नज़र नहीं आ रहे, वहीं कुछ लोग आज भी मनुष्यत्त्व को धारण किए हुए हैं, सदाचार को धारण किए हुए हैं, दूसरों की सहायता निःस्वार्थ भाव से करना अपना धर्म समझते हैं। जिनकी शख़्सियत, जिनकी विद्वता हिन्दी जगत में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

ऐसे व्यक्तित्त्व के साथ रहकर औरों का भी व्यक्तित्त्व निखरता है। मेरा सौभाग्य है कि ऐसी शख़्सियत के साथ मुझे रहने का, काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। वो कोई और नहीं मेरे अपने भाई, सहकर्मी, मित्र, गुरु, मेरे मार्गदर्शक डॉ. मिथिलेश अवस्थी हैं, जो डॉ. मधुकरराव वासनिक पी. डब्ल्यू. एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष ही नहीं बल्कि महाविद्यालय तथा हिन्दी विभाग के ज्ञानरत्न भी हैं।

मेरे उनके साथ बिताए कई यादगार लम्हे हैं। मुझे आज भी याद है महाविद्यालय में मेरा पहला दिन, जब मैं हिन्दी विभाग में आया। पहला दिन सभी के जीवन में एक अलग भूमिका में आता है। मुझे कहीं अकेलापन महसूस ना हो इसलिए सर मुझे अपने हँसते-खेलते अंदाज में सहज करने का प्रयास करते रहे। मुझे महसूस हो नहीं होने दिया कि महाविद्यालय में मेरा पहला दिन है। एक बड़े भाई की तरह, एक अच्छे साथी की तरह वे मेरी ओर ध्यान दे रहे थे, उनमें किसी भी बात का कोई घमंड नहीं था। वे एक ऐसे व्यक्ति हैं जो अपनों को, स्वयं से छोटों को पूरा सहयोग करते हैं, किसी ना किसी रूप में सभी का मनोबल तथा आत्मविश्वास बढ़ाते हैं।

मंच से भय प्रत्येक व्यक्ति को किसी ना किसी रूप में लगता है, उसमें मैं भी शामिल था। मुझे बार-बार मंच पर भेज कर मेरे डर को ही समाप्त नहीं किया वरन मेरे भीतर आत्मविश्वास भर दिया। आज जहाँ मनुष्य कभी दूसरे से मंच साझा करना नहीं चाहता, वहीं वे अपना मंच अपने से छोटों को प्रदान कर, उनमें विश्वास भर, स्वयं श्रोता दीर्घा में बैठकर औरों का मनोबल बढ़ाते हैं। जहाँ हम गलती करें वे बड़े प्यार से हमारी गलती को सुधारने का प्रयास करते हैं। उनकी डाँट में भी

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

प्यार ही होता है, सुधारने का ही भाव होता है।

विद्यार्थियों के साथ, अपने से छोटों के साथ तो वे बच्चे ही बन जाते हैं। बच्चों के समान ही उनकी आदतें दिखाई देती हैं। उनमें कहीं अहंकार दिखाई नहीं देता। उनका यह व्यवहार हमेशा यही सीख देता है कि चाहे हम कितने भी बड़े बन जाएँ पर हमारा बचपन हमसे कभी दूर ना हो। हमारा बचपन ही है जो हमें हँसाता है, गुदगुदाता है, हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। जो व्यक्ति ऐसे जीवन जीता है वह हमेशा उत्साह से भरपूर ऊर्जावान होता है। यही ऊर्जा आप में नज़र आती है। बच्चों के साथ बच्चा, बड़ों के साथ बड़ा, साहित्यकारों के बीच साहित्यकार, विश्लेषकों में विश्लेषक, आलोचकों में आलोचक ही नज़र आते हैं। किसी भी विषय को देखने की उनकी दृष्टि बड़ी ही गंभीर और व्यापक है। उनका कथन ही है कि, 'मनुष्य की दृष्टि बड़ी नहीं बल्कि उसका दृष्टिकोण बड़ा और व्यापक होना चाहिए।'

अपने से छोटों में नेतृत्व क्षमता तैयार करना सर का स्वभाव है। वे हमेशा मुझसे कहते हैं कि 'नागदेवेजी मेरे जाने से पूर्व आप को सभी काम आ जाने चाहिए। मैं यह नहीं चाहता कि मेरा साथी किसी भी स्थिति में, किसी भी विषय पर कहीं पर भी कमजोर पड़ जाए।' वे छोटी से छोटी बातों से लेकर, बड़ी से बड़ी चीजों तक प्रत्येक बातों की जानकारी देते हैं। हमें सिखाने के लिए पहले वे स्वयं करके दिखाते हैं। कई बार तो वे हमसे काम करवाते हैं और जो हमसे त्रुटियाँ रह जाती हैं उसे कैसे सुधारा जाए, हमें सिखाते हैं। चाहे पेपर कटिंग हो या फाइलिंग, चाहे मंच संचालन हो या वक्ता के रूप में, आज जो कुछ भी थोड़ा-बहुत सीखा हूँ कहीं ना कहीं सर के आशीर्वाद के कारण ही सीख पाया हूँ।

यदि कभी आपको किसी शब्द की कमी खल रही हो, या किसी विषय की जानकारी चाहिए तो आप एक बार सर से अवश्य संपर्क साधें। हमारा विश्वास है कि आपको उसका जवाब मिल जाएगा। उनका शब्द भंडार बहुत व्यापक है। किसी भी विषय के बारे पूछ लीजिए आपको संपूर्ण जानकारी मिल जाएगी। शायद यह ज्ञान उनके निरंतर अभ्यास से, उनके अनुभव से ही उन्हें प्राप्त हुआ होगा। उनका यह निरंतर अभ्यास औरों को भी अभ्यास के लिए प्रेरित करता है। उनके हाथ में हमेशा कोई न कोई पुस्तक दिखाई देगी। उनके इसी पुस्तक-प्रेम, निरंतर पठन की आदत के कारण ही उनका विषय-ज्ञान औरों से कहीं आगे है। एक बार गूगल गुरु जानकारी देने में असफल हो सकते हैं, पर हमारे गुरु कभी असफल नहीं हो सकते। वे हमेशा अद्यतन रहते हैं। उनका ज्ञान-कोश सिंधु के समान है पर उनमें थोड़ा सा भी अहम् भाव नहीं है। यही सच्चे विद्वान की पहचान भी है।

अवस्थी सर निरंतर कुछ न कुछ रचना कर्म, शोध कार्य करते हुए दिखाई

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

देते हैं। एक दिन जब वे शोध कार्य में तल्लीन थे, तब मैं उनके शोध-पत्र को पढ़ रहा था। मैंने देखा कि उन्होंने कम से कम आठ से नौ बार उस शोध-पत्र को पढ़ कर सुधारा। जितनी बार वे अध्ययन करते उतनी बार कोई न कोई गलती ढूँढ़ ही लेते और सुधार करते। शोध के प्रति इतनी तपस्या बहुत ही कम लोगों में दिखाई देती है। वे हमेशा कहते हैं कि 'नागदेवेजी शोध करते समय विषय के, शोध के समस्त पक्षों को, पद्धतियों को ध्यान में रखना चाहिए, एकांगी नहीं होना चाहिए।' वे कहते हैं कि 'मैं आज भी शोध पत्र लिखता हूँ तो अपने ही लिखे शोध-पत्र का पुनः-पुनः अध्ययन करता हूँ। जितनी बार अध्ययन करेंगे उतनी बार कहीं ना कहीं, कुछ न कुछ त्रुटि दिखाई देगी, आप उसमें सुधार कर पाएँगे। आप के शोध में निखार आएगा, सटीकता आएगी।' उनकी कही गई एक-एक बात सदैव मेरे मस्तिष्क में गूँजती रहती है।

अब तक सर की चार पुस्तकें 'इम्तहान रोज़ होते हैं', 'यशपाल के उपन्यासों में युगचेतना', 'चिंतन के क्षण' और 'अहिन्दी भाषी और हिन्दी रंगमंच' प्रकाशित हो चुकी हैं। 'इम्तहान रोज होते हैं' एक प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। अन्य पुस्तकें रिसर्च पर आधारित हैं। अगले वर्ष उनकी दो पुस्तकें और प्रकाशित होने वाली हैं। सर की एक पुस्तक 'अहिन्दी भाषी और हिन्दी रंगमंच' के प्रकाशन से पूर्व की तैयारी मैं अपनी आँखों से देख चुका हूँ। किस तरह सर स्वयं अहिन्दी भाषी रंगकर्मियों से मिलते थे। एक नाटककार राजेंद्र शुक्ला से सर के साथ मैं स्वयं मिल चुका हूँ। सर ने उस पुस्तक में ऐसे भी रंगकर्मियों का उल्लेख किया है जिनसे हिन्दी जगत पूरी तरह से परिचित नहीं है। उनकी रंगकला पर प्रकाश डालने का कार्य सर ने अपनी इस पुस्तक के माध्यम से किया है। सर नवीनता को विशेष महत्त्व देते हैं। उनकी प्रत्येक पुस्तक में आपको नए-नए शब्द दिखेंगे, विषय में नयापन दिखेगा। वे स्वयं अपनी पुस्तकों की सामग्री को टाइप करते, प्रूफशोधन कर प्रकाशकों का काम आसान कर देते हैं। प्रकाशकों के साथ उनके संबंध हमेशा ही सहज एवं स्वस्थ रहे। जैसे कई प्रकाशकों से लोग 'कुछ' चाहते हैं। परंतु सर किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखते। महाविद्यालय में कई प्रकाशक सर से मिलने के लिए आते हैं और सर से कहते हैं, 'आपके ग्रंथालय में हमारे प्रकाशन की कुछ पुस्तकें रखी जाएँ, आगे जैसा आप कहेंगे वैसा हो जाएगा। आप लोगों की पुस्तकों के प्रकाशन की जिम्मेदारी हम पर छोड़ दीजिए। सर उनसे कहते हैं- 'आप जो कुछ भी दे सकते हैं वह महाविद्यालय को दें जिससे विद्यार्थियों का भला होगा।' सर से वे कहते हैं कि 'आप जैसे लोग बहुत कम हैं, आपके जैसे सभी हो जाएँ तो यह समाज सुधर जाएगा, साहित्य को नई दिशा मिल पाएगी।' सर कहते हैं 'मनुष्य को स्वयं के प्रति ईमानदार होना चाहिए।' अपने प्रति, स्वयं के कार्य के प्रति वे हमेशा ही ईमानदार रहे हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

अवस्थी सर छात्रों को हमेशा अधिक से अधिक पुस्तकें पढ़ने हेतु प्रेरित करते रहते हैं, वे गाइड के खिलाफ हैं। उनका मानना है कि गाइड छात्रों के ज्ञान को संकुचित करती है। जहाँ तक मैं जानता हूँ अवस्थी सर और डॉ. बसंत त्रिपाठी सर दोनों ने गाइड के खिलाफ मुहिम भी छेड़ी थी। उनके अनुसार जो छात्र पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करते हैं उनके ज्ञान में कभी कोई कमी नहीं रहती। पुस्तकें हमेशा ज्ञान-वृद्धि करती हैं जबकि गाइड में ज्ञान का अधूरापन और भ्रम रहता है। गाइड पढ़ने वाला वही अधूरापन अपने जीवन में लिए रहता है जबकि पुस्तकें पढ़ने वाला संपूर्ण ज्ञान अपने भीतर समाहित करता है। अवस्थी सर और त्रिपाठी सर इन दोनों के साथ मुझे चर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ। हम सभी आलोचना पर आधारित संगोष्ठी की पूर्व तैयारी के दौरान मिले। मैंने देखा कि इन दोनों की कार्यशैली कहीं ना कहीं एक जैसी ही है। दोनों अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं करते और इनकी यही बात मुझे बेहद पसंद है। जिस कार्य को वे हाथ में लेते हैं उसे पूर्णता प्रदान करते हैं। हम आपस में कई विषयों पर चर्चा करते। इन चर्चाओं से मैं बहुत लाभान्वित हुआ। इन दोनों की जोड़ी यदि किसी कार्यशाला में, संगोष्ठी में मौजूद हो तो मंच पर जो वक्ता होता है, वह अपने शब्दों को तोल-मोल कर बोलता है, क्योंकि कब इनकी ओर से प्रश्न दागे जाएंगे कुछ पता नहीं। इन दोनों में से कोई भी यदि किसी प्रश्न को लेकर खड़े हो जाए तो वक्ता की सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती है। विश्वविद्यालय में इन दोनों की जोड़ी प्रसिद्ध है। आज भले ही त्रिपाठी सर इलाहाबाद में स्थाई हो गए, परंतु आज भी दोनों एक दूसरे के संपर्क में हैं। ये दोनों दोस्ती के अटूट बंधन में बंधे हैं, साथ न होकर भी एक दूसरे के साथ हैं।

विभिन्न संस्थाओं द्वारा सर को किसी ना किसी रूप में सदैव आमंत्रित किया जाता है। ऐसे ही किसी पुस्तक की समीक्षा करने हेतु सर अमरावती जा रहे थे। मैं भी उस समय उनके साथ जा रहा था। तीन घंटे का सफर कैसे बीता, पता ही नहीं चला। पूरे समय हमारी किसी न किसी विषय पर चर्चा चलती रही। रास्ते में एक कार खड़ी दिखाई दी जिसमें एक परिवार अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ बैठा था, शायद उनकी गाड़ी खराब हो गई थी, वे परेशान दिखाई दे रहे थे। आज के दौर में मानवीयता जहाँ समाप्त हो रही है वहीं सर उसे आज भी धारण किए हुए हैं। उन्होंने अपनी गाड़ी रोकी, उनसे पूछा कि 'क्या हुआ? कही छोड़ना हो तो बताएँ। हमारी किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो तो निःसंकोच बताएँ।' उन्होंने अपनी तरफ से मदद के लिए हाथ बढ़ा दिए। ऐसे ही वे हर किसी की सहायता करते रहते हैं। सुबह 11.00 बजे हम अमरावती पहुँचे, जहाँ सर को समीक्षक के रूप में आमंत्रित किया गया था। सर ने उस पुस्तक की इतनी सुंदर समीक्षा की कि हॉल में सभी लोग पूरी तल्लीनता के साथ उन्हें सुनते नज़र आए। सभी मंत्रमुग्ध हो गए। हिन्दी जगत के कई विद्वानों को

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

मैंने सुना है परंतु सर के समान वक्ता बहुत कम नज़र आते हैं। शायद लोग मेरा उनके प्रति आदर समझें या प्रेम, परंतु मैं पूरे विश्वास के साथ, पूरे गर्व के साथ यह कह सकता हूँ- विदर्भ के श्रेष्ठ वक्ताओं में सर की गिनती की जाती है। उस पुस्तक की समीक्षा के उपरांत सभागार में बैठे सभी लोग सर से मिलने के लिए प्रतीक्षारत थे। प्रत्येक व्यक्ति उनसे मिलना चाहता था। पूरा समां देखने लायक था। उस समय मैंने जाना कि किस तरह सर महाविद्यालय में 15 से 20 दिन तक निरंतर उस पुस्तक का अध्ययन कर रहे थे, अपने बिंदु तैयार कर रहे थे। वे हमेशा कहते हैं कि 'मुझे नई-नई पुस्तकों का अध्ययन करना बेहद पसंद है, उससे मुझे ऊर्जा मिलती है, बल मिलता है।' उनका पुस्तकों के प्रति प्रेम देखते ही बनता है। महाविद्यालय के विभाग में भी उन्होंने कई पुस्तकें रखी हैं। वे छात्रों को विविध विषयों की पुस्तकें अध्ययन करने हेतु प्रेरित करते रहते हैं, पुस्तकें मस्तिष्क का भोजन हैं, जितना अध्ययन करोगे उतना ही बुद्धि का विकास होगा।

एक दिन मैं सर के घर गया था। मैंने देखा उनका घर अपने आप में एक छोटा पुस्तकालय है। उनके टेबल पर कई पुस्तकें थीं जो व्यवस्थित रूप से रखी हुई थीं। उनके घर में जितनी अलमारियाँ हैं सभी में केवल पुस्तकें रखी हैं। सर की आय का अधिकांश हिस्सा केवल पुस्तकें खरीदने में ही खर्च होता है। जो पुस्तकें कहीं प्राप्त नहीं हो रही होगीं, वे पुस्तकें हमें उनके घर के पुस्तकालय में अवश्य प्राप्त हो जाएँगी। वे पुस्तकों को बड़ा सहेजकर, संभालकर रखते हैं। उनकी पुरानी से पुरानी पुस्तकें भी हमें नई नज़र आएँगी। वे पुस्तक के पृष्ठ कभी मोड़ते नहीं, न ही उसे फैलाकर रखेंगे। अध्ययन करते समय उनके पुस्तक पकड़ने का ढंग देखने और सीखने योग्य है। उनका अधिकांश समय अध्ययन में ही व्यतीत होता है। हिन्दी साहित्य के तो वे ज्ञाता हैं ही साथ ही वे ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र में भी पारंगत हैं। कई लोग अपनी समस्याओं को लेकर सर से मिलने आते हैं। सर सबकी समस्याओं का निदान करते हैं। उनके द्वार से कोई खाली हाथ नहीं लौटता है- न ज्ञान से, न ही विचार से।

छात्रों के साथ सर के संबंध बहुत मधुर हैं। गुरु के रूप में वे कभी उनके मित्र हैं, तो कभी पिता। वे हँसते-खेलते उन्हें पढ़ाते हैं। उनके अध्यापन की विशेषता ही यही है कि यदि कोई विषय वे समझा दें, आपको जीवन भर उस विषय को समझने के लिए किसी किताब की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। बच्चों को यदि वे मेरे प्यारे, मेरे लाड़ले, या किसी आदरसूचक शब्दों से संबोधित कर दें, तो बच्चे उनके इस संकेत को समझ जाते हैं, कि हमसे कोई ना कोई गलती हो गई है। वे सर से कहते हैं, 'सर ऐसे मत पुकारो, हमें अच्छा नहीं लगता।' यहाँ तक कि उनकी आँखों से आँसू निकल आते हैं और यदि किसी बच्चे को वे छिपकली, मेंढकी, कोमड़ी, झिंगरू, डमरू ऐसे शब्दों से नवाज़ें तो बच्चे बहुत खुश हो जाते हैं। मैंने जान-बूझ कर 'नवाज़े' शब्द का

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

प्रयोग किया है। छात्र स्वयं सर के मुँह से अपने लिए ऐसे शब्दों को सुनना चाहते हैं। वे सर को जानते हैं, उनको समझते हैं। वे जानते हैं कि सर ने हमें ऐसे शब्दों से पुकारा इसका मतलब ही है कि हम सर के करीब हैं। छात्रों के साथ ऐसी कनेक्टिविटी हमें कहीं देखने को नहीं मिलती। वे बच्चों के साथ पूरे बच्चे बन जाते हैं तब आपको डॉ. मिथिलेश अवस्थी कहीं नज़र नहीं आएंगे। डॉ. मिथिलेश अवस्थी वहीं नज़र आएंगे जहाँ हिन्दी साहित्य के प्रकांड पंडित उपस्थित हों।

हम दोनों कभी भी अपने नाम के आगे डॉक्टर शब्द लगाना पसंद नहीं करते। एक दिन सर ने कहा, 'अरे यार अपनी नेमप्लेट में नाम के आगे जो डॉक्टर शब्द लगा है उसे हटा दें तो कैसा रहेगा? हम शोध कार्य, प्रदर्शन के लिए नहीं वरन अपनी ज्ञान-वृद्धि के लिए करते हैं।' सादगी से कही गई उनकी बात हमें बहुत पसंद आई। थोड़ी देर बाद मैं नेमप्लेट लेकर पेंटर के पास पहुँच गया। उनसे कहा 'भैया इन दोनों नाम के आगे जो डॉक्टर शब्द है उसे निकाल दीजिए।' पेंटर ने मुझे गौर से देखा और कहने लगा, 'आप लोग पागल तो नहीं हैं, लोग अपने नाम के आगे ऐसे शब्द लिखवाने आते हैं और आप लोग निकालने आ रहे हैं। एक बार फिर सोच लीजिए।' मैंने कहा, 'भाई सोच लिया है आप निकाल दीजिए' और वह बेमन से अपने काम में लग गया। सर को जब यह घटना बताई तब हम मिलकर बहुत हँसे।

हमें यदि कोई पुरस्कार प्राप्त हो जाए तो हम सभी इस बात का ढिंढोरा पीटेंगे, अखबारों में प्रकाशित करेंगे, परंतु सर इन सब से जुदा हैं। उन्हें अब तक दस राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, लेकिन इस बात को बहुत कम लोग जानते हैं। वे दिखावा करना कभी पसंद नहीं करते। मंच पर फोटो खिंचवाने से लेकर अखबार की सुर्खियाँ बनने से उन्हें परहेज है। जो भी व्यक्ति उन्हें करीब से जानते हैं, वे उनके स्वभाव, उनके ज्ञान से परिचित हैं। सर बहुत स्पष्टवादी हैं, गलत बात को बर्दाश्त नहीं कर सकते। यदि कोई गलत बयानबाजी कर रहा हो तो वे तुरंत उसे जवाब दे देंगे। वे यह नहीं सोचेंगे कि आगे वाले शख़्स का समाज में क्या रुतबा है। वे निर्भीक व्यक्ति हैं। जो व्यक्ति गलत कार्य करता है उसे भय होता है। उन्हें किसी का भय नहीं। वे तो सिद्धांतवादी हैं। वे कभी कोई गलत कार्य नहीं करते, न ही किसी गलत कार्य के भागीदार बनते हैं। वे औरों को भी गलत कार्य करने से रोकते हैं, सही मार्ग दिखाते हैं। सदैव सद्मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति हमेशा औरों के लिए प्रेरक होता है। सर हम सभी के प्रेरणास्रोत हैं।

एक दिन सर से मैंने कहा- 'सर! मैं भी आप जैसा वक्ता बनना चाहता हूँ।' सर ने कहा, 'मुझ जैसा नहीं, मुझसे भी अच्छा बनिए।' मैंने उनसे पूछा, 'सर आप इतने बेहतरीन वक्ता कैसे बन पाए?' तब उन्होंने कहा कि, 'बेहतरीन का तो पता

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

नहीं, बस विषय को न्याय देने का प्रयास करता हूँ।' वे अपने अनुभव बताने लगे। 'आरंभिक दौर में मैं सेमिनार और कार्यशालाओं में विद्वतजनों के वक्तव्यों को ध्यान से सुनता था। भाषण देते समय उनकी शैली, उनका विषय ज्ञान, किस तरह से विषय को रखते हैं यह सब समझने का प्रयास करता रहा। कुछ वर्षों तक मैं केवल औरों को सुनता रहा। विषय से संबंधित पुस्तकें पढ़ता रहा। मैंने अपने लिए एक बढ़िया रिकार्डर भी खरीदा। अपने दिए गए भाषण को रिकार्ड कर उन्हें ध्यान से सुनता। किस शब्द का प्रयोग बार-बार हो रहा, उसे समझने का प्रयास करता। इस तरह निरंतर अभ्यास करता रहा। आज भी मैं अपने आप में सुधार करने का निरंतर प्रयास करता रहा हूँ।' सर की यह बात मुझे हमेशा सिखाती है, प्रेरित करती है।

सभी लोग हमेशा ही उनसे उनके उत्तम स्वास्थ्य के संदर्भ में पूछते रहते हैं, क्योंकि वे अपनी उम्र से लगभग दस वर्ष छोटे दिखते हैं। उनके स्वास्थ्य का राज है है- अनुशासन। अनुशासन खान-पान में, रहन-सहन में, योग-अभ्यास में, उनकी संपूर्ण जीवनचर्या में ही अनुशासन है। उनके जीवन में तीन बार ऐसे अवसर आए जब डॉक्टर ने उन्हें ऑपरेशन की सलाह दी थी परंतु उनके अनुशासनात्मक जीवन ने, उनके योगाभ्यास ने उन्हें बिना ऑपरेशन के ही ठीक कर दिया। स्वयं डॉक्टर भी आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने कहा, 'अवस्थी जी आपने असंभव को भी संभव कर दिखाया।' वे नियमित रूप से प्रतिदिन कई किलोमीटर तक पदयात्रा करते हैं, तत्पश्चात योगाभ्यास करते हैं। उनकी यही जीवनचर्या उनके जीवन का अभिन्न अंग है।

ऐसे ही एक और दिन सर महाविद्यालय में योग के माध्यम से श्वास-साधना सिखा रहे थे। उस समय सर ने अपने पेट पर हम लोगों को खड़े रहने के लिए कहा। हम सभी डर रहे थे कि सर को चोट न लग जाए, पर सर के बार-बार कहने पर पहले येरकलवार सर उनके पेट पर खड़े हुए फिर पाटिल सर। इसके बाद जब सर ने दो लोगों को पेट पर खड़े होने के लिए कहा तब तो हम और घबरा गए पर सर की बात पर भरोसा कर दो लोग सर के पेट पर खड़े हुए। हमने देखा सर सामान्य ढंग से लेटे हैं उन पर कोई असर नहीं हो रहा था। ये थी उनकी योग-साधना। इसके बाद सर ने मुझे भी अपने पेट पर खड़े रहने के लिए कहा। पहले तो मैं सामान्य रूप से खड़ा रहा, एकाएक मैं मस्ती के मूड में आ गया। मैं उनके पेट पर नाचने लगा। मेरी इस हरकत पर सभी लोग तो हँसने ही लगे पर सबसे अधिक कोई खिल-खिलाकर हँसा, वो अवस्थी सर थे। उनकी वह हँसी उनके हास्य की मुक्तावस्था थी। वे योग के माध्यम से नाक से पानी खींचकर मुँह से बाहर निकालना, धागा निकालने जैसे कई कठिन योगाभ्यास करके दिखाते हैं। पता नहीं क्यों सर और मेरी ट्यूनिंग बहुत ही

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

बढ़िया है। हम एक-दूसरे की कंपनी बहुत एन्जॉय करते हैं। हमारी जोड़ी को सभी सराहते हैं। महाविद्यालय हो या महाविद्यालय से बाहर, प्रत्येक व्यक्ति जो भी हमसे मिलता है, हमारी ट्यूनिंग की तारीफ करता ही है।

महाविद्यालय में सर के सुझावों पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाता है। उनके सुझाव बहुत ही यूनिक रहते हैं। मीटिंग में सर के द्वारा जो भी सलाह दी जाती है, उसे तुरंत अमल में लाया जाता है। सर बहुत ही स्पष्टवादी हैं, किसी भी विषय पर खुलकर अपनी बात रखते हैं। उनके बात रखने का अंदाज ही निराला है। शब्दों के वे जादूगर हैं। उनके शब्दों में ही वह ताकत है कि सामने वाला नतमस्तक हो जाता है। यदि वे क्रोध में आ जाएँ तो उनके प्रकोप से कोई बच नहीं सकता, परंतु क्रोध में भी वे किसी भी तरह के गलत शब्दों का प्रयोग नहीं करते। यदि किसी के संबंध में उनके मन में खटास आ जाए, कोई व्यक्ति यदि उनकी नज़र से गिर जाए, वह फिर कभी उनकी नज़र में उठ नहीं सकता। वो जब भी सामने आएगा, जितनी बार आएगा, उनके प्रकोप से बच नहीं पाएगा।

महाविद्यालय का निरंतर विकास हो, इस दृष्टि से वे लगातार प्रयासरत रहते हैं। पिछले वर्ष हमारे महाविद्यालय में नॅक समिति आई थी। उसी समय मेरी तबियत खराब हो गई। उसी मुश्किल घड़ी में सारा विभागीय काम अकेले सर के कंधों पर आ गया। मैं अस्पताल में चिंतित था कि सर अकेले सारे काम कर रहे हैं। मेरी इस चिंता से सर वाकिफ थे। सर उस समय महाविद्यालय से जुड़ी हर एक बात शेयर करते थे। 'मैत्री' पत्रिका का संपादन कार्य मेरी ओर था और आखिरी दौर में ही मेरी तबियत बिगड़ गई थी। सर ने कहा, 'मेरे रहते तुम कोई चिंता मत करो। अपनी ओर ध्यान दो।' सर ने 'मैत्री' पत्रिका का संपादन दायित्व स्वीकारा और उसे पूर्णता प्रदान की। ऐसे कई मौकों पर जब भी विभाग को मेरी आवश्यकता रही मैं किसी ना किसी अत्यावश्यक कार्य के कारण अनुपस्थित रहा। परिस्थितियाँ ही ऐसी रहतीं कि सर भी कुछ कह नहीं पाते थे। कभी मेरे बड़े भाई की असमय मृत्यु, कभी मैं अस्पताल में, कभी आवश्यक व्यक्तिगत कार्य, ऐसी स्थिति में सर ने मेरी परिस्थिति को समझा। सारा कार्य उन्होंने और हमारे अंशकालीन प्राध्यापक प्रा. प्रीति गौतम, प्रा. रोमा दुर्गे, प्रा. संतोष कौर वालिया, हाल में ही आई प्रा. जागृति सिंह जी ने संभाला। तब से सर मुझे चिढ़ाते रहते हैं कि, 'जब भी विभाग में कोई काम आ जाए नागदेवे जी गायब।' और मैं भी मजाकिया लहजे में कहता- 'वैसे तो सारा काम मैं ही करता हूँ, सबूत हैं मेरे कंधे, देखो कितने दर्द दे रहे हैं। कितना काम मुझसे कराते हैं। 'सर कभी किसी कार्य से जाते हैं तो मैं यही कहता हूँ' सारा काम मेरे ही जिम्मे है, पूरा विभाग मेरे ही कंधों पर।' और हम सब हँसने लगते। हमारे विभाग के हम सब साथी

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

एक परिवार की तरह ही रहते हैं। मेरे लिए मेरे विभाग के सभी साथी प्रा. प्रीति गौतम, प्रा. रोमा दुर्गे, प्रा. संतोष कौर वालिया और प्रा. जागृति सिंह सभी मेरे लिए मेरी बहनें ही हैं। सभी साथी एक परिवार की तरह मिल-जुलकर रहते हैं और इस परिवार के मुखिया हैं अवस्थी सर। जिन्होंने बड़े प्यार से हम सबको एक माला में पिरोया है। हमारे विभाग में जो भी व्यक्ति आता है वह हमारे इस परिवार की तारीफ करता ही है। इस विभाग की इतनी तारीफ होती है कि लगता है विभाग को औरों की दृष्टि से बचाने हेतु एक काला टीका लगा दिया जाए। कहते हैं, नींव मज़बूत रही तो भवन अपने आप मजबूत हो जाता है। हमारी नींव हैं हमारे आदर्श अवस्थी सर, जो हमारी शक्ति हैं।

महाविद्यालय में छात्र विशेष रूप से सर की कक्षा में अधिक संख्या में उपस्थित रहते हैं। बच्चे सर की कक्षा में जाने के लिए आतुर रहते हैं। कक्षा में सर के पहुँचने से पहले ही वे पहुँचते हैं। सब जानते हैं कि सर समय के कितने पाबंद हैं। सर को कक्षा की ओर जाते हुए देख सारे बच्चे तेजी से भागते हुए कक्षा में पहुँचते हैं। जो बच्चा देरी से पहुँचा समझो वह सर का ज्ञान पाने से वंचित रह गया। साथ ही सर का आशीर्वाद रूपी कोप का प्रसाद उसको प्राप्त हुआ। वे बड़ी रोचकता के साथ अपने चुटीले अंदाज में छात्रों को पढ़ाते हैं। यदि विषय गंभीर हो तो बड़ी गहराई से, तल्लीनता से पढ़ाते हैं। विषय की विस्तार से जानकारी देते हैं। उनकी गंभीरता देखने योग्य होती है। वे एक अनुशासनप्रिय व्यक्ति हैं, परंतु जब हम शैक्षणिक यात्रा पर जाते हैं, तब सर का बचपना भी देखने लायक रहता है। वे बच्चों के संग पूरे बच्चे बन जाते हैं। उनके साथ मस्ती करना, बस में बच्चों को नचवाना, जो नहीं नाच रहे होते उन पर बहुत ही ठंडा पानी डालना, पेड़ पर चढ़ना, बच्चों के साथ रेस लगाना, भोजन करते समय बच्चों जैसी हरकतें, उनका यह चुटीला अंदाज बच्चों को बहुत भाता है। शैक्षणिक यात्रा के माध्यम से विषय को इस तरह समझाते हैं कि वह विषय हमेशा के लिए विद्यार्थियों के मस्तिष्क में अंकित हो जाता है। बच्चे सर का बहुत आदर करते हैं, उन्हें बहुत चाहते हैं। यहाँ तक कि पूर्व छात्र उनसे मिलने के लिए बेहद आत्मीयता के साथ पहुँचते हैं। छात्रों का प्रेम तो सभी शिक्षकों के साथ रहता ही है पर सर से कुछ अधिक ही है। शायद सर का स्वभाव ही कुछ ऐसा है कि जो भी उनसे मिला वह उन्हीं का हो गया।

महाविद्यालय में सर निरंतर नित नए प्रयोग करते रहते हैं। विभाग में ही उन्होंने 'शोध सत्संग', 'स्वानुशासित समय बद्ध अध्ययन प्रक्रिया', 'सृजन-संवाद' जैसे उपक्रमों को आरंभ किया। 'शोध सत्संग' के माध्यम से उन्होंने शोध को नई दिशा दी। शोधकर्ताओं के शोध पर चर्चा की जाती है। उनके शोध का आस्वाद

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

लिया जाता है। 'स्वानुशासित समय बद्ध अध्ययन प्रक्रिया' के माध्यम से छात्र अपनी प्रगति कैसे की जाए, प्रतिदिन की दिनचर्या का आकलन कर अपना अध्ययन-समय कैसे बढ़ाए आदि बातें वह स्वयं तय करने लगता है। 'सृजन-संवाद' के माध्यम से सृजनकर्ता अपनी कलम की धार को तेज बनाता है। स्व-रचित रचनाओं का पठन किया जाता है। उस पर चर्चा की जाती है। जिससे सृजनकर्ता के सृजनकर्म में सुधार होता है।

रिश्तों की अहमियत सर जानते हैं। सर के जिनसे भी रिश्ते बने हैं उन्हें वे पूरी शिद्दत से निभाते हैं। महाविद्यालय में भी सर के कुछ लोगों से रिश्ते बन गए। महाविद्यालय में सर की बड़ी बहन के रूप में समाजशास्त्र विभाग की पूर्व प्रमुख प्रा. शीला चहांदे मैडम रहीं जो अब सेवानिवृत्त हो चुकी हैं। सर के अब भी उनसे घरेलू रिश्ते हैं। छोटी बहन के रूप में अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख प्रज्ञा बागड़े मैडम हैं। बड़ी बहन के रूप में चहांदे मैडम को डाँटने का अधिकार भी रहा है। मैंने स्वयं सर को डाँट खाते हुए देखा है। पर उसमें भी एक निःस्वार्थ प्रेम, एक दूसरे के प्रति अधिकार का भाव दिखाई देता है। छोटी बहन बागड़े मैडम और सर के बीच एक निश्छल प्रेम भाव मैंने बेहद करीब से महसूस किया है। बेटी के रूप में सर का बेहद आदर करने वाली अंग्रेजी विभाग की प्रा. डॉ. मेघा रामटेके हैं। सर अपनी बेटी का बहुत ध्यान रखते हैं। भाई के रूप में अंग्रेजी विभाग के प्रा. सुदेश भोवते का वे बहुत आदर करते हैं। उनके घर की आलू की सब्जी और रोटी सर को बहुत स्वादिष्ट लगती है। जब भी वे आलू की सब्जी और रोटी लाते हैं, सर वो टिफिन भोवते जी से छीन लेते हैं और उन्हीं को खाने नहीं देते। उनके लिए नाम मात्र का एक निवाला रखते हैं। यह दृश्य देखने लायक होता है, हम सभी हँसने लगते हैं। वे आपस में कई गंभीर विषयों पर भी चर्चा करते रहते हैं। लघु भ्राता के रूप में इतिहास विभाग के प्रा. डॉ. चंद्रशेखर पाटिल हैं। सर को उनकी सादगी बेहद प्रिय है। मेरे और सर के रिश्ते तो इस लेख में कई जगह दृष्टिगोचर हुए हैं आगे भी होंगे। मेरी पत्नी शुभांगी, जिन्हें वे अपनी बहू कहते हैं, मुझे सर का डर दिखाकर अपने काम साध लेती हैं। मेरे बच्चे जब कोई अच्छा कार्य करें तो सर बड़े अपनत्व के साथ कहते हैं कि अपने बड़े पापा पर (अर्थात उन पर) गए हैं और यदि मेरे बच्चे कोई गलती कर देते हैं तो कहते हैं-तुम्हारी छाप है। मेरी माँ मुझसे हमेशा कहती हैं, 'तुम सर के सानिध्य में हो इसलिए मैं निर्श्चित हूँ।' उनके सानिध्य में रहकर प्रत्येक व्यक्ति निर्श्चित रहता है। महाविद्यालय के प्रत्येक व्यक्ति का उनसे कुछ न कुछ रिश्ता अवश्य है। सर केवल रिश्तों का मान ही नहीं रखते, वरन उसे शिद्दत से निभाते भी हैं।

मैंने हमेशा ही सर को औरों की मदद करते हुए देखा है। मनुष्य चाहे कैसी

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

भी परेशानी में हो, किसी भी तरह के संकट में हो, चाहे निराशावाद से ग्रसित हो उनसे मिलने पर सारे संकट, परेशानी काफूर हो जाती है। आशावाद का जन्म होता है और मनुष्य सकारात्मक कदम उठाने लगता है। संकट के समय तो वे संकट-मोचक ही बन कर आते हैं। ऐसे ही कई संकटों का सामना मुझे भी करना पड़ा और उन संकटों से उन्होंने ही मुझे बाहर निकाला। संकट चाहे व्यक्तिगत हो, चाहे साहित्यिक, चाहे और किसी प्रकार का- वे हर क्षण मेरे साथ ही खड़े रहे, एक भाई की तरह, एक दोस्त की तरह। जब वे किसी अनजान व्यक्ति की मदद कर सकते हैं, तो अपने करीबियों के लिए तो वे क्या नहीं कर सकते। उनके लिए तो वे अपनी जान छिड़कते हैं। अपने करीबियों की तारीफ़ तो वे पीठ पीछे भी करते रहते हैं। उनके कुछ करीबी मित्रों से मैं कभी भी पूरी तरह से नहीं मिला। फिर भी मैं उनके बारे में बहुत कुछ जानता हूँ। जैसे श्री संजय तिवारी जी, श्री मनोज सिंह जी, श्री संतोष त्रिपाठी जी आदि। संजय जी से हमारी पहली मुलाकात धरमपेठ साइंस कॉलेज में हुई। ऐसा लगा ही नहीं कि हमारी उनसे पहली मुलाकात थी। हम दोनों को जोड़ने वाली कड़ी हमारे अवस्थी सर थे। भले ही वे वहाँ मौजूद नहीं थे लेकिन सर के मुख से इतनी बार तारीफ़ सुन चुके थे कि संजय जी हमारे लिए अनजान होने के बावजूद अनजान नहीं थे। हम दोनों निरंतर सर के संदर्भ में बातें कर रहे थे। सर के प्रति आदर उनकी आँखों में, उनके संपूर्ण व्यक्तित्त्व में दिखाई दे रहा था। ऐसा ही आदर मैं उन सबमें भी देखता हूँ जो उनके करीब होते हैं। सर को जो करीब से जानता है, समझता है, वो दिल से सर का आदर ही नहीं करता, उनके जैसा बनने का प्रयास भी करता है। कुछ भी गलत कार्य करने से पहले वो मन ही मन सर की आँखें देख लेता है और गलत कार्य करने से अपने आपको रोक लेता है। यह दृश्य अपने आप में वी. शांताराम की पुरानी फ़िल्म 'दो आँखें बारह हाथ' जैसा ही है। जहाँ वे 06 खूंखार कैदी नायक की आँखों की कल्पना कर गलत कार्य करने से बच जाते हैं। यह आँखों का डर नहीं वरन उनके प्रति आदर है। यह आदर उनके संपूर्ण व्यक्तित्त्व के प्रति है। मैं उन्हें हमेशा कहता हूँ, 'सर आपने सभी का जो सात्विक प्रेम और आदर पाया है यही आपके जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है।'

सर के व्यक्तित्त्व की संपूर्णता में उनके माता-पिता द्वारा दिए गए संस्कार गहराई से दिखाई देते हैं। माँ तो माँ है, उनसे मिलो तो पूरी तबियत खुश हो जाती है। उनके विचार, उनकी बातें सुनने योग्य हैं। वे कहती हैं, 'जो पढ़ाता है वह ही ब्राह्मण है। जन्म से कोई ब्राह्मण नहीं होता, ब्राह्मण होने के लिए सद्कर्म एवं सद्विचार जरूरी है।' उनकी बातें मनुष्यत्त्व को धारण किए हुए हैं। यही मनुष्यता सर में भी है। कहते हैं माता-पिता के गुण ही बच्चों में आते हैं। सर को देखें तो यह कथन सही नज़र आता है। हमारी भाभी भी सर के जैसी ही हैं। उनके जीवन में भी अनुशासन

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

का विशेष महत्त्व है। ऐसा लगता है कि दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हैं। पर जब हम भाभी-देवर एक साथ मिल जाते हैं तो सर को छेड़ने लगते हैं। हम सब एक ही परिवार के सदस्य हैं, ऐसा लगने लगता है। सर का व्यक्तित्त्व ही कुछ ऐसा है कि जो भी व्यक्ति उनसे मिला वो उनके व्यक्तित्त्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। वे एक ऐसे व्यक्ति हैं जो किसी भी परिस्थिति में अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करते। सिद्धांतों पर चलने वाले, मूल्यों को आत्मसात करने वाले, जिनकी शख़्सियत के आगे प्रत्येक व्यक्ति नतमस्तक हो जाता है। वे एक श्रेष्ठ पत्रकार, प्रख्यात कवि, साहित्यकार, आलोचक, समीक्षक, प्रखर वक्ता, अनुसंधाता, बहुआयामी व्यक्तित्त्व के धनी, ज्ञान की साक्षात मूर्ति हैं। उनमें किंचित मात्र भी अहंकार नहीं है। जीवन के कठिन समय से वे भी गुजरे हैं परंतु उनके चेहरे पर उसके भाव कभी नज़र नहीं आते। उनका मानना है कठिन परिस्थितियाँ मनुष्य को सीख देती हैं। हमारे अनुभव ज्ञान को प्रगाढ़ता देते हैं। उनकी कही गई हर बात मेरे मस्तिष्क में सदैव गूँजती रहती है। मैं यह नहीं जानता कि मैं उनके जैसा बन पाउँगा पर मैं यह जरूर जानता हूँ कि सर मुझे एक दिन वैसा बना ही देंगे क्योंकि सर अपने छात्र को अधूरा नहीं छोड़ते और मैं तो तन-मन से उनका छोटा भाई हूँ, साथी हूँ, शिष्य हूँ। सर अपने कर्तव्य का पालन अवश्य करेंगे। उनके जैसा गुरु, भाई और साथी पाना मेरा सौभाग्य है। उनके व्यक्तित्त्व की महानता हिमालय के उच्च शिखर से भी ऊँची है। उनकी शीतल छाया चाँद की छाया से भी अधिक शीतल है। उनके स्वभाव की शुभ्रता पर्वत शिखर में आच्छादित बर्फ़ से भी अधिक शुभ्र है। जो भी मनुष्य उनकी संगति से लाभान्वित हुआ वह उन्हीं के रंग में रंग गया। मेरा सौभाग्य है कि मुझे उनके साथ रहने का मौका मिला, उनसे सीखने को मिला। उनके व्यक्तित्त्व के नए-नए आयामों को क़रीब से जानने को मिला। उसे लिपिबद्ध करने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं अपना लेख बड़ी श्रद्धा के साथ सर को समर्पित करता हूँ।

*सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,* डॉ. मधुकरराव वासनिक पी. डब्ल्यू. एस. *कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, कामठी मार्ग, नागपुर 440-026*

*मो.: 9921286071* *ई-मेल: sumedh2911@gmail.com*

0 0 0 0 0

# भारतीय साहित्य
## चिन्तन और चुनौतियाँ

*सम्पादक*

**मनोज पाण्डेय**

ए.आर. पब्लिशिंग कम्पनी
दिल्ली

Scanned with CamScanner

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी
*1/11829, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032*
मो. : + 91 9968084132, + 91 9910947941
arpublishingco11@gmail.com

BHARTIYA SAHITYA : CHINTAN AUR CHUNAUTIYAN
*Edited by* Manoj Pandey

ISBN : 978-93-88130-16-5
Criticism

© सम्पादक

प्रथम संस्करण 2019

मूल्य : ₹ 625

*ले-आउट : शेष प्रकाश शुक्ल*
मोबाइल : 97-16-54-35-13

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

*कॉम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110 032 में मुद्रित*

Scanned with CamScanner

*प्रखर साहित्य-चिन्तक*

*पद्मश्री प्रो. रमेशचन्द्र शाह*

*को*

*सादर!*

Scanned with CamScanner

# अनुक्रम

भारतीय साहित्य : चिन्तन और चुनौतियाँ 17
*—रमेशचन्द्र शाह*

रवीन्द्रनाथ टैगोर : नवजागरण, राष्ट्रवाद और भारतीय भाषाएँ 25
*—इन्द्रनाथ चौधुरी*

भारतीय साहित्य में सन्निहित राष्ट्रीय-सांस्कृतिक इतिहास 41
*—सूर्यप्रसाद दीक्षित*

भारतीय साहित्य की चिन्ताधारा 47
*—सूरज पालीवाल*

काल-चेतना और साहित्य सृष्टि 55
*—नन्दकिशोर आचार्य*

भारतीय साहित्य की चुनौतियाँ और चिन्तन 65
*—रमेश दवे*

भारतीय साहित्य में राहुल सांकृत्यायन की आत्मकथा का महत्व 71
*—जितेन्द्र श्रीवास्तव*

भारतीय साहित्य : अतीत और वर्तमान 83
*—शिवप्रसाद शुक्ल*

आदिवासी साहित्य : भारतीय साहित्य के लिए एक चुनौती 89
*—डॉ. वीणा दाढे*

उजली हँसी के छोर की तलाश : उजली हँसी के छोर में 98
*—आलोक पाण्डेय*

Scanned with CamScanner

समकालीन कविता में ग्राम्य चेतना 106
—डॉ. मलखान सिंह

बाजारवादी दुनिया के चंगुल में गिरफ्त भारतीय गाँव 113
—डॉ. के. श्रीलता

भारतीय साहित्य और जीवन-मूल्य 120
—डॉ. अशोक कुमार

भारतीय साहित्य और जीवन-मूल्य 125
—डॉ. जोगेन्द्र सिंह बिसेन

भारतीय साहित्य के गौरव ग्रन्थ 'मूकमाटी' में सम-सामयिक चिन्तन 130
—डॉ. चन्द्रकुमार जैन

भारतीय साहित्यिक चिन्तन के विविध आयाम 139
—डॉ. कृष्णा जी. श्रीवास्तव

ज्ञानाश्रयी कविता में लोक-चिन्तन : एक पुनर्मूल्यांकन 145
—डॉ. अनिल कुमार राय

हिन्दी काव्य में भारतीयता और राष्ट्रीयता 153
—डॉ. चन्द्रशेखर सिंह

भारतीय साहित्य की चिन्तन-दृष्टि 157
—दुर्गेशनंदिनी

भारतीय साहित्य की अवधारणा और दृष्टि 164
—प्रो. स्मृति शुक्ल

भारतीय साहित्य और जीवन-मूल्य 168
—डॉ. दिलीप कुमार अवस्थी

संगम साहित्य का वैशिष्ट्य 174
—पीयूष कुमार

हिन्दी भाषा एवं साहित्य : अध्ययन की समस्याएँ 181
—डॉ. मीनाक्षी जोशी

साहित्य में राष्ट्रीय चिन्तन 185
—डॉ. सुमेध पी. नागदेवे

भारतीय साहित्य के विविध आयाम : अध्ययन की चुनौतियाँ 192
—डॉ. श्रद्धा चन्द्राकर, डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर,
—डॉ. पूनम, डॉ. अभिषेक पटेल

मराठी रंगभूमि पर दिशांतर करनेवाली दो कालजयी नाट्य कृतियाँ : 'नटसम्राट' और 'घासीराम कोतवाल' 202
—डॉ. सोनू जेसवानी

भारतीय साहित्य की चुनौतियाँ 209
—डॉ. राजेश ठाकुर

हिन्दी साहित्य की कालजयी रचनाएँ 213
—डॉ. नीता सिंह

राष्ट्रीयता की अवधारणा और राष्ट्रबोध 218
—डॉ. आनन्दसिंह पटेल

भारतीय साहित्य की विशेषताएँ 225
—बैजीनाथ

भारतीय साहित्य और जीवन-मूल्य 231
—डॉ. बी. नन्दा जागृत

भारतीय साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ 237
—डॉ. लक्ष्मीकान्त चन्देला

भारतीयता का समाजशास्त्र 242
—फरहत परविन

भारतीयता के सन्दर्भ में : हिन्दी और मराठी के शृंगार काल का तुलनात्मक अध्ययन 249
—डॉ. येशुक्रिती हजारे

उदात्त-प्रेम की औपन्यासिक अभिव्यक्ति : बाणभट्ट की आत्मकथा 259
—डॉ. मजीद शेख

भारतीय परम्परा एवं साहित्य के नायक : राम 265
—डॉ. साकेत सहाय

भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ 269
—कुंजनलाल जियालाल लिल्हारे

Scanned with CamScanner

# साहित्य में राष्ट्रीय चिन्तन

डॉ. सुमेध पी. नागदेवे

भाषा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की संवाहक होती है। किसी भी राष्ट्र की एकता-अखंडता को बनाने के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण कड़ी है। भाषा और उसके साहित्य के माध्यम से ही प्रत्येक राष्ट्र का विकास हो पाया है। कहते हैं, जिस देश की भाषा का साहित्य समृद्‌ध होता है, वह देश, उसका समाज विकसित होता है। जीवन के तमाम स्तर पर विशाल लोक समुदाय को किसी ना किसी भाषा का उपयोग करना ही पड़ता है। साहित्य ही मनुष्य में नैतिकता तथा जीवन-मूल्य भरता है। वह साहित्य ही है, जो मनुष्यों में भारतीयता और राष्ट्रीयता के मूल्यों को पिरोता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो देश में आज भारतीयता और राष्ट्रीयता का संकुचित रूप दिखाई दे रहा है। मनुष्य में मनुष्यता का ह्रास होता जा रहा है। उसमें पशुता नज़र आती जा रही है। देश में राष्ट्रीयता की भावना कम होती जा रही है। जो भारतीय अन्य देश में बस गया है, वह पुनः लौट कर आने का प्रयास नहीं करता। वह वहीं बस जाता है। ऐसे बहुत कम लोग हैं जो देश के लिए कुछ करना चाहते हैं। आज राष्ट्र धर्म को महत्व ना देकर केवल अपने जाति, धर्म, वर्ग, पंथ को महत्त्व देने लगते हैं, तब उस देश की राष्ट्रीयता, उसकी एकता, अखंडता को ठेस पहुँचती है। इन विपरीत स्थितियों में साहित्यकारों की भूमिका और अधिक बढ़ जाती है। हमारा इतिहास हमें बताता है कि हमारी संकुचित राष्ट्रीयता की भावना के कारण ही यह देश कई वर्षों तक विदेशी शासकों का गुलाम रहा था। किस तरह हम विभिन्न आधारों में बंटे रहे, जिसका लाभ कई विदेशी ताकतों ने उठाया।

आदिकाल के साहित्य पर यदि हम गौर करें तो हमें नज़र आएगा कि उस समय के साहित्यकारों ने राष्ट्रीयता की भावना को उठाया तो सही, लेकिन उनकी राष्ट्रीयता



Scanned with CamScanner

केवल उनकी रियासत, और रियासतदार की प्रशंसा तक ही सीमित थी। उनकी रियासत ही उनके लिए उनका देश थी। वे अपने पड़ोसी को अपना शत्रु समझते थे। जिसका लाभ मुस्लिम शासकों ने उठाया और अधिकतर भारतीय शासकों ने उनकी अधीनता स्वीकार की। मुस्लिम शासक यहाँ आए और यही बस गये। अब उनका भी देश यही हो गया।

भक्तिकाल के साहित्य में भक्तिधारा बही और अध्यात्म के मार्ग से भारतीय जीवन-मूल्यों का संरक्षण किया गया। इस काल में साहित्य के माध्यम से दो विभिन्न संस्कृतियों का मेल किया गया। अपने साहित्य के माध्यम से तुलसीदासजी ने कहा था– "कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहं हित होई।"[1] कीर्ति, कविता और सम्पत्ति वही उत्तम है जो लोकहित में हो। जिस तरह गंगा नदी जहाँ-जहाँ से बहती है, वहाँ-वहाँ सबका कल्याण करती जाती है। अतः साहित्य ऐसा होना चाहिए जो मनुश्य में जीवन-मूल्यों को पिरोकर राष्ट्र को मज़बूत करने की दिषा में काम करता हो। इस काल में नैतिक शिक्षा का विशेष महत्व था। फिर भी यदि राष्ट्रीयता की बात करें तो इस काल में वह दो संस्कृति के मेल में, भक्ति की धारा में कहीं ख़ो गयी। राष्ट्रीयता हिन्दू-मुस्लिम शासकों के दो पाटों में पिस कर रह गयी। भारतीयता का भाव इस दौर में भी नहीं थ़ा, केवल अपनी सत्ता, अपनी रियासत तक ही सीमित था।

रीतिकाल में अंग्रेजों, फ्रांसीसियों, पुर्तगालियों ने इस देश पर अपनी सत्ता स्थापित की। वे आए तो इस देश में व्यापार करने परन्तु यहाँ के सत्ताधीश बन गये, जिसका मूल कारण था हमारे देश के लोग जाति, धर्म, वर्ग, पंथ में बंटे हुए थे। हिन्दू-मुस्लिम शासकों के रूप में बंटे थे। उनके लिए उनकी रियासत ही उनका देश। उनकी इसी अनेकता का लाभ उठाकर, 'फूट डालो राज करो' की नीति अपनाकर इन विदेशी शासकों ने इस देश को गुलाम बनाया। इन गुलाम लोगों को भारतीय होने का अहसास दिलाया। उनके स्वाभिमान, आत्मसम्मान को झकझोरा। रियासतों में बंटे इस देश को भारत के रूप में पुनः एक सूत्र में बाँधकर हम सब को भारतीय होने का गौरव प्रदान किया। जब हमें यह एहसास हुआ कि हम सभी भारतीय हैं, तब 1857 ई. में अंग्रेजों के ख़िलाफ आज़ादी की पहली लड़ाई बहादुरशाह जफर, रानी लक्ष्मीबाई, नानासाहेब पेशवा, अंग्रेजों के अधीन भारतीय सिपाहियों की विद्रोही सेना के द्वारा संयुक्त रूप से लड़ी गयी। इस लड़ाई में भले ही भारतीयों की हार हुई परन्तु इस लड़ाई ने हिन्दू हो या मुस्लिम या किसी अन्य वर्ग, पंथ से, सभी को



Scanned with CamScanner

भारतीय होने का एहसास दिलाया। उन्हें यह महसूस कराया कि हम अलग-अलग रियासतों के नहीं इस भारत भूमि के नागरिक हैं।

अंग्रेजों के भारत आने के उपरांत उन्हें यह देश चलाने के लिए शिक्षित लोगों की आवश्यकता होने लगी, फलस्वरूप उन्होंने शिक्षा का मार्ग सभी के लिए खोल दिया। जो शिक्षा भारत में कभी केवल एक वर्ग के लिए सीमित थी। जब यह शिक्षित लोग उच्च शिक्षा हेतु विदेश गये, तब उन्हें यह एहसास हुआ कि हम कितने पिछड़े हुए हैं। जब वे भारत लौटे, तो उन्होंने कई सुधारवादी आंदोलन चलाए। कई बुराइयों, कुरीतियों का विरोध किया। इन सुधारवादी आंदोलन में राजाराम मोहन रॉय, न्यायमूर्ति रानडे, महात्मा ज्योतिबा फुले आदि प्रमुख थे।

28 दिसंबर 1885 मुंबई में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। पहले तो इसका कार्य सामाजिक स्वरूप का था, परन्तु धीरे-धीरे इसने अपने आप को राजनैतिक स्वरूप में ढाल लिया। इस दौर में इसे राजनैतिक गति प्रदान हुई। लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, बालकृष्ण गोखले, सुभाशचंद्र बोस आदि नेताओं के मार्गदर्शन में आंदोलन और अधिक तेज हुए।

जनता में आज़ादी के बीज बोने में भारतीय पत्रकारिता का विषेश महत्व रहा है। बंगाल में प्रकाशित 'बंगाल गजट' अर्थात 'हिक्की गज़ट' अखबार के सम्पादक जेम्स ऑगस्ट हिक्की जो स्वयं ब्रिटिश नागरिक थे। पत्रकारिता को ही अपना धर्म एवं उनका कर्म समझकर उन्होंने अंग्रेजों की नीतियों के ख़िलाफ अपने अखबार के माध्यम से आवाज़ बुलंद की। अपने अखबार के माध्यम से पत्कारिता किसे कहते हैं, यह समझाया। भले ही उन पर कई प्रतिबन्ध लगाए गये, परन्तु उन्होंने अपनी आवाज़ को मुखर ही रखा। उनकी इसी निर्भयता ने अन्य पत्रकारों को नयी दिशा दी। जो आवाज़ 1857 ई. की लड़ाई में कहीं दब गयी थी, जो स्वाधीनता का स्वर सुप्त रूप में रहने वाले भारतीयों के मन से कहीं खो गया था। उस स्वर को इस अखबार ने हवा दी। भारतीय पत्रकारों के डर को समाप्त किया। उनके स्वाभिमान, आत्मसम्मान को जगाया। उन्होंने अपने लेख, कहानी, निबन्ध, काव्य, प्रहसनों के माध्यम से आज़ादी के स्वर को बुलंद किया, जनता में आज़ादी की लौ जगाई।

हिन्दी साहित्य में भारतेंदु मंडली ने अपनी पत्रकारिता एवं अपने साहित्य के विषय-वस्तु के अंतर्गत राष्ट्रीयता और सामाजिक चेतना पर विशेष बल दिया। बालमुकुंद गुप्त ने 'शिवशंभु के चिट्ठे' प्रसिद्ध व्यंग्य लेख के माध्यम से ब्रिटिश शासकों पर तीखा प्रहार किया। लोगों के भीतर आज़ादी के बीज बोने हेतु हमारे



Scanned with CamScanner

स्वतंत्रता सेनानी प्रयास कर रहे थे, तो दूसरी ओर अधिकतर भारतीय साहित्यकार अपनी लेखनी से जनता में जनजागरण कर रहे थे। अधिकांश हिन्दी साहित्यकारों की रचनाएँ राष्ट्रीय चेतना पर ही आधारित हैं। जैसे जयशंकर प्रसाद रचित नाटक 'चंद्रगुप्त', मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती', भारतेंदु हरिश्चंद्र की 'भारत दुर्दशा', सुभद्राकुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का 'पराजय गीत', रामनरेश त्रिपाठी का 'मानसी' काव्य संग्रह, रामधारीसिंह दिनकर की अधिकांश रचनाएँ जैसे 'कुरुक्षेत्र', 'हुँकार' आदि राष्ट्रप्रेम तथा जनजागरण से भरी हैं। बंगाली साहित्यकारों में रवीन्द्रनाथ ठाकुर, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, डी. एल. रॉय आदि साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं से देश को नयी दिशा दी। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की रचना 'वंदेमातरम' राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रभक्ति का अप्रतिम उदाहरण है। मराठी साहित्यकारों में केशवसूत, वीर सावरकर, कुसुमाग्रज की अधिकतर रचनाएँ राष्ट्रप्रेम पर ही आधारित हैं। 'क्रांतीचा जयजयकार' इस कविता के माध्यम से एक राजबन्दी के मन में व्यक्त विचारों को अभिव्यक्त किया है—

"कशास आई, भिजविसि डोळे, उजळ तुझे भाल/रात्रीच्या गर्भात उद्याचा असे उषःकाल/सरणावरती आज आमुची पेटतात प्रेते/उठतिल त्या ज्वालांतुन भावी क्रांतीचे नेते/लोहदण्ड तव पायांमधले खळाखळा तुटणार/ आई, खळाखळा तुटणार/गर्जा जयजयकार क्रांतिचा गर्जा जयजयकार"[2]

स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में हमने देखा है कि किस तरह विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग, पंथ के लोगों ने अपने आप को भूलकर, केवल यह याद रखा कि मैं भारतीय हूँ। उस दृष्टि से प्रयास कर मिलजुलकर, एकदूसरे का हाथ पकड़कर, कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। असंभव सी प्रतीत होने वाली अपनी आज़ादी को प्राप्त किया। 15 अगस्त 1947 ई. में यह देश आज़ाद हुआ और राजतंत्र से हटकर इस देष में लोकतंत्र स्थापित हुआ। फिर वह स्वर्णिम दिवस भी आया जिस दिन संसद के पटल पर डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की अध्यक्षता में भारतीय संविधान को प्रस्तुत किया गया और तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने उसे मंजूर किया। राष्ट्रीयता को परिभाषित करते हुए डॉ. आंबेडकर ने कहा-"मैं प्रथम भारतीय हूँ, मध्य में भी भारतीय हूँ, और जीवन के अंत तक मैं भारतीय ही रहूँगा।"

आज़ादी के संघर्ष के दौरान हम भारतवासियों ने बड़े ही सुंदर सुनहरे सपने देखे। जब देश आज़ाद होगा, तब इस देश में रामराज्य स्थापित होगा। चारों तरफ खुशहाली



Scanned with CamScanner

होगी। इस देश में अमन-चैन स्थापित होगा। अभिव्यक्ति की आज़ादी होगी। तब हम बड़े गर्व से, अपने अधिकार से, स्वाभिमान के साथ, आत्मविश्वास के साथ एक स्वर में कह सकेंगे, कि हम आज़ाद हैं। यह हमारी भारत भूमि है, जिस पर हमें गर्व है। जैसे ही यह देश आज़ाद हुआ, यह मुल्क दो हिस्सों में बँट गया। एक भारत बना तो दूसरा पाकिस्तान। यह विभाजन अपने साथ भीषण हिंसा और रक्तपात लाया। कत्लेआम में हजारों लोग मारे गये, लाखों लोगों को अपना घर-बार, कारोबार छोड़कर अनजान स्थानों पर जाना पड़ा। विभाजन की इस त्रासदी को यषपाल ने अपने उपन्यास 'झूठा सच' और भीष्म साहनी ने 'तमस' में दर्शाया है। जो लोग एक-दूसरे से कंधे से कंधा मिलाकर आज़ादी की लड़ाई लड़े थे, वे एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गये, एक-दूसरे को शक की निगाहों से देखने लगे, आज भी शक की यह स्थिति हमें दिखाई देती है।

आज़ादी के कुछ वर्षों में ही हमारे पड़ोसी देश ने हम पर आक्रमण किया। 1962 में चीन ने 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' का नारा लगाकर हमारी पीठ पर खंजर घोंपा। हम पर आक्रमण किया। इस दौर में हमारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से देश में पुनः देशभक्ति का बीज बोया। हमारे राष्ट्रसंतों ने अपने भजनों द्वारा राष्ट्रीयता की लौ जगाई। राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज ने सरहद पर भारतीय सिपाहियों के समक्ष भजन गाते हुए कहा–

"आओ चीनियों, मैदान में, देखो हिन्द का हाथ।/ अब हिन्द जाग गया तुम्हारे साथ।।/ भारत से लड़नेवाले हो? ईश्वर से जरा तो डरो।/ अरे सुन लो।/ क्यों संसार दुखाते हो? शांति भंग करवाते।/सब देश को क्रोध चढ़ाकर, अपना नाश कराते हो।"[3]

कैफी आज़मी के गीत ने लोगों के भीतर वीर रस भर दिया। एक सैनिक के अंतर्मन की आवाज़ को अपने गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया–

"कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियों/ अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों/ सांस थमती गयी, नब्ज़ जमती गयी/ फिर भी बढ़ते कदम को न रूकने दिया/कट गये सर हमारे तो कुछ गम नहीं/ सर हिमालय का हमने न झुकने दिया/ मरते-मरते रहा बांकपन साथियों/ अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों"[4]

इस तरह के गीतों ने हम भारतीयों के मन पर गहरा प्रभाव डाला। साहित्यकारों ने पुनः एक बार देशभक्ति की भावना को अपने साहित्य में तरज़ीह दी।

आज़ादी के बाद जो सपने भारतीयों ने देखे थे, वे सब धुंधले पड़ गये। रामराज्य



Scanned with CamScanner

की कल्पना, कल्पना ही रह गयी और मोहभंग की स्थिति का निर्माण हुआ। देश भ्रष्टाचार में लिप्त हो गया। जो नेता कभी हमारे आदर्श थे, वे ही कमजोर और भ्रष्ट हो गए। ऐसे भ्रष्ट नेताओं ने ऐसे लोगों को भी प्रमाणपत्र बाँटे जो स्वतंत्रता सेनानी नहीं थे। नौकरशाही में घूसखोरी ऐसी बढ़ी कि बिना लेन-देन के कोई काम होना असंभव हो गया। राजनीति में सत्ता लोलुपता बलवती होने लगी। सत्ता पाने हेतु नेतागण किसी भी स्तर पर जाने लगे। जनता त्रस्त होने लगी। साहित्यकारों ने जनता की इसी मानसिक कुंठा, इसी नग्न यथार्थ को अपने साहित्य में स्थान दिया। आज की इस परिस्थिति पर अदम गोंडवी जी ने कहा है–

"जो डलहौजी न कर पाया वो ये हुक़्क़ाम कर देंगे/ कमीशन दो तो हिन्दोस्तान को नीलाम कर देंगे/ ये बन्दे–मातरम का गीत गाते हैं सुबह उठकर/ मगर बाज़ार में चीजों का दुगुना दाम कर देंगे/ सदन में घूस देकर बच गयी कुर्सी तो देखोगे/ वो अगली योजना में घूसखोरी आम कर देंगे।"

हमारे देश में कई विदेशी शासक आए, उनके साथ उनके लोग भी आए। उन्हें यह देश इतना प्यारा लगा कि वे यहीं बस गये। उनका इस देश पर अटूट प्रेम रहा। आज़ादी की लड़ाई के बारे में हम सभी को पता है कि किस तरह सभी ने एक साथ मिलजुलकर, संघर्ष के बाद आज़ादी प्राप्त की थी। यह भारत देश की खूबी है कि जो यहाँ आया वह यहीं बस गया। चाहे आर्य हो या यूनानी, चाहे मुगल हो या ब्रिटिश, चाहे फ्रांसीसी हो या पुर्तगाली जो भी यहाँ आया यहीं का हो गया। जो यहाँ आकर यही बस गया, वो ही भारतीय कहलाया। परन्तु आज मनुष्य, मनुष्य में ही भेद किया जा रहा। उन्हें विभिन्न आधारों पर चाहे जातिगत हो या धर्मगत, चाहे भौगोलिक हो या भाषागत बॉटा जा रहा। मनुष्यता का भाव कहीं खो गया ऐसा महसूस होने लगा। अहिंसा के स्थान पर हिंसा बढ़ने लगी। मनुष्य से अधिक पशु को महत्व दिया जाने लगा। देशभक्त और देशद्रोही के सम्बन्ध में सकारात्मक कम और नकारात्मक चर्चा और अधिक छिड़ने लगी। ऐसा लगने लगा कि देष दिषाहीन होने लगा है। ऐसी स्थिति में साहित्यकारों की भूमिका और अधिक बढ़ जाती है। हम यह जानते हैं जब भी समय आया साहित्यकारों ने अपनी भूमिका को बखूबी निभाया है। निर्भयता से बेखौफ होकर उन्होंने सरकार के खिलाफ़ अपनी आवाज़ बुलंद की। चाहे आज़ादी का दौर हो, चाहे युद्ध का वातावरण, साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से इस देश को नयी दिशा दी। वर्तमान में साहित्यकारों को पुनः उस दिशा में बढ़ना होगा, पुनः भारतीयता और राष्ट्रीयता के बीज बोने होंगे। पुनः अति



Scanned with CamScanner

# भारतीय साहित्य और अनुवाद

संपादक
डॉ. गजानन किशनराव पोलेनवार

Vanya
वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर
कानपुर - 208021 (उ.प्र.)

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

ISBN 978-93-91119-35-5
मूल्य : पाँच सौ पचास रुपये मात्र

पुस्तक : भारतीय साहित्य और अनुवाद
संपादक : डॉ. गजानन किशनराव पोलेनवार
© : संपादक
प्रकाशक : वान्या पब्लिकेशंस
3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता,
कानपुर – 208 021
Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com
info@vanyapublications.com
Website : www.vanyapublications.com
Mob. : 9450889601, 7309038401

संस्करण : प्रथम, 2021
मूल्य : 550.00
शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : सार्थक प्रिंटर्स, कानपुर

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

# अनुक्रम

1. संस्कृति और अनुवाद : पारस्परिक अंतः संबंध
**डॉ. सतीष यादव**
2. अनुवाद : अतित और इतिहास
**डॉ. संतोष गिरहे**
3. भारतीय नाट्य साहित्य और नाट्य–अनुवाद–सौंदर्य
(मराठी नाटक 'घासीराम कोतवाल' के विशेष संदर्भ में)
**डॉ. सोनू जेसवानी**
4. अनुवाद की समस्याएँ
**डॉ. संजय एस. धोटे**
5. भारतीय साहित्य और भारतीयता
**डॉ. सुमेध पी. नागदेवे**
6. भक्तिकालीन संत साहित्य : एक दृष्टिक्षेप
**प्रोफेसर डॉ. आबासाहेब राठोड**
7. भारतीय साहित्य की समस्याएँ
**डॉ.मा.ना.गायकवाड**
8. भारतीय संत साहित्य
9. भारतीय साहित्य और अनुवाद की भूमिका
**डॉ.रमेश टी. बावनथड़े**
10. हिन्दी साहित्य और अनुवाद
**सुफी भाहेमिना सबा**
11. संत कबीर के दोहों में व्यक्तित्व विकास
**प्रा. डॉ. रविंद्रनाथ माधव पाटील**
12. भारतीय साहित्य
**प्रा.डॉ.मनोहर भंडारे**
13. भारतीय समाज में अनुवाद की उपादेयता
**डॉ के पद्मा रानी**
14. साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ
**प्रा. उर्मिला पवार**

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

15. अंतरभाषिक अनुवाद एवं समस्याएँ : हिंदी, मराठी के संदर्भ में
**डॉ. सपना तिवारी**
16. निराला के काव्य में चित्रित भारतीयता के बिंब सार
**लक्ष्मण किशनराव पेटकुले**
17. भारतीय साहित्य और अनुवाद की समस्याएं
**प्रा. कमलाकर देवरावजी नवघरे**
18. भारतीय परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक साहित्य अध्ययन का क्षेत्र और विस्तार
**प्रा.डॉ.राहुल पुंडलिकराव वाघमारे**
19. भारतीय साहित्य में जीवन मूल्यों का मांगलिक स्वरूप एवं लोकतांत्रिक संबद्धता
**डॉ. शोभा राजेश बघेल**
20. महिला सशक्तीकरण एवं समाज
**उर्मिला कुमारी**
21. भारतीय संत साहित्य
**डॉ. अर्पिता अग्रवाल**
22. भारतीय साहित्य का स्वरूप
**डॉ. राजकुमारी यादव**
23. आधुनिक कालीन गद्य साहित्य का स्वरूप
**प्रा. पल्लवी दिपक जुनघरे**
24. भारतीय साहित्य का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं अनुवाद विज्ञान
**डॉ. हरगोविंद टेंभरे**
25. भारतीय साहित्य में अनुवाद प्रक्रिया का महत्व
**डॉ. मनीष जी. टेंभरे**
26. भारतीय साहित्य में अनुवाद की भूमिका
**सारीका गौतमराव खरात (थोरात)**
27. मशीनी अनुवाद और हिंदी रूप विश्लेषण
**वासुदेव, कुलदीप कुमार पाण्डेय**

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

# 5

# भारतीय साहित्य और भारतीयता

डॉ. सुमेध पी. नागदेवे

## सारांश

भारतीय अर्थात भारत से संबंधित। जिसने भारतीयता को अपने भीतर आत्मसात किया हो वही भारतीय। भारतीयता से तात्पर्य उस विचार या भाव से है जिसमें भारत से जुड़ने का बोध होता है जो भारतीय संस्कृति से संबंधित हो। भारतीयता का प्रयोग राष्ट्रीयता को व्यक्त करने के लिए भी किया जाता है परंतु राष्ट्रीयता की संकुचित भावना के कारण ही यह देश हजारों वर्षों तक विदेशी शासकों का गुलाम रहा। हम विभिन्न आधारों में बँटे रहे, जिसका लाभ विदेशी ताकतों ने उठाया। आदिकाल से लेकर भक्तिकाल तक, भक्तिकाल से रीतिकाल तक हमें देश में राष्ट्रीयता का अभाव दिखाई पड़ता है। 1857 ई. में अंग्रेजों के ख़िलाफ आज़ादी की पहली लड़ाई लड़ी गई। अंग्रेजों को कामकाज कराने हेतु शिक्षित भारतीयों की आवश्यकता थी। अतः उन्होंने शिक्षा के द्वार सभी के लिए खोल दिए। जब यह शिक्षित लोग उच्च शिक्षा हेतु विदेश गए तब उन्हें यह एहसास हुआ कि हम कितने पिछड़े हुए हैं। जब वे भारत लौटे तो उन्होंने कई सुधारवादी आंदोलन चलाए। जनता में आज़ादी के बीज बोने में भारतीय पत्रकारिता का विशेष महत्त्व रहा है। एक तरफ स्वतंत्रता सेनानी जनजागरण कर रहे थे तो दूसरी ओर अधिकतर भारतीय साहित्यकार अपनी लेखनी से जनता की चेतना को झकझोर रहे थे। इस स्वतंत्रता आंदोलन में विभिन्न जाति, वर्ण, वर्ग, पंथ के लोगों ने मिलजुलकर, एक–दूसरे का हाथ पकड़कर, कंधे से कंधा मिलाकर भारतीयता को आत्मसात कर राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया तब जाकर हमें आज़ादी मिली। 1962 में चीन ने 'हिन्दी–चीनी भाई–भाई' का नारा लगाकर हमारी पीठ पर खंजर घोंपा। इस दौर में हमारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से देश में पुनः भारतीयता का बीज बोया। आज़ादी के कुछ वर्ष पश्चात ही मोहभंग की स्थिति आयी। रामराज्य की कल्पना, कल्पना ही रह गई। मनुष्य, मनुष्य में ही भेद कर रहा है। उसमें पशुता नज़र आने लगी। ऐसी स्थिति में साहित्यकारों की भूमिका

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

और अधिक बढ़ गई है। उन्हें पुनः भारतीयता के बीज बोना होगा, मानव को मानव बनाना होगा।

**संकेताक्षर–** भारतीयता, जीवन–मूल्य, सामाजिक चेतना, एकता, जनजागरण।

वर्तमान में जहाँ देश में आतंक का साया मॅडराता हुआ नज़र आता है, जहाँ एक दूसरे के प्रति आदर के स्थान पर द्वेष, प्रेम के स्थान पर घृणा नज़र आती है। जहाँ अहिंसा के स्थान पर हिंसा, मानवता के स्थान पर पशुत्व नज़र आता है। ऐसे समय भारतीय साहित्यकारों की भूमिका अधिक बढ़ जाती है उन्हें पुनः वही आदर्श, वही भारतीयता स्थापित करना होगी जिन्हें स्वार्थवश कहीं भूला दिया गया है। महात्मा बुद्ध के देश ने संपूर्ण विश्व को मानवता का पाठ पढ़ाकर प्राणीमात्र पर करुणा बरसाई हो। जिसने पर्यावरण में ही ईश्वर देखा हो। ~~जिस देश ने~~ महात्मा गांधी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जैसे महापुरुषों के सपनों को साकार करने का सपना देखा हो। आज उसी भारत को पुनः भारतीय जीवन मूल्यों को अपने भीतर आत्मसात करना होगा। स्वतंत्रता पूर्व हम देखते है कि सभी भारतवासियों ने अपने जाति–धर्म से परे होकर इस देश की आज़ादी हेतु मिल–जुलकर स्वतंत्रता की ज्योति जलाकर भारत देश को बेड़ियों से मुक्त किया था। उस समय सबके मन में किसी अन्य भाव के स्थान पर केवल एक ही भाव था, वह था भारतीय होने का। वह न हिंदू था, ना मुस्लिम और ना किसी अन्य धर्म, पंथ, जाति के बंधन में जकड़ा था। वह विशुद्ध रूप से भारतीय था।

भारतीयता को परिभाषित करते हुए डॉ. आंबेडकर ने कहा– "मैं प्रथम भारतीय हूँ, मध्य में भी भारतीय हूँ और जीवन के अंत तक मैं भारतीय ही रहूँगा।" भारतीय अर्थात् भारत से संबंधित। जिसने भारतीयता को अपने भीतर आत्मसात् किया हो वही भारतीय। भारतीय शब्द में 'ता' प्रत्यय लगाकर भारतीयता शब्द का निर्माण हुआ है। भारतीयता से तात्पर्य उस विचार या भाव से है जिसमें भारत से जुड़ने का बोध होता है जो भारतीय संस्कृति से संबंधित हो। भारतीयता का प्रयोग राष्ट्रीयता को व्यक्त करने के लिए भी किया जाता है। यह देश बहुभाषी देश है। विविध जाति, धर्म, पंथ के लोग यहाँ बसते हैं। उनकी अपनी भाषा, संस्कृति, रीति–रिवाज तथा परंपराएँ हैं। इन विविधताओं के बावजूद वे सभी एकमाला में पिरोए हुए हैं, जिसे हम भारतीयता कहते हैं। जिसने संय[redacted]मण, सहिष्णुता, त्याग, परोपकार, औदार्य, रचनात्मकता, सह–अस्तित्व, बंधुत्व आदि जीवन मूल्यों अपने भीतर आत्मसात किए हुए हैं। इन जीवन–मूल्यों को निष्ठापूर्वक जीना तथा उनकी सतत् रक्षा करना ही सच्ची भारतीयता है। वसुधैव कुटुम्बकम्, मानवता, त्याग की भावना, परोपकार,

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

सहिष्णुता, अहिंसा, अध्यात्मिकता, सर्वधर्म समभाव, एकता और राष्ट्रीयता आदि अवधारणाओं को ही भारतीय साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से अभिव्यक्त कर मानव कल्याण को नई दिशा देकर भारतीयता को साकार किया है।

प्राचीन काल से ही देखे तो हमें यह ज्ञात होता है कि यह जीवन मूल्य हमारे संस्कृति का परिचायक है। इस देश में पंचमहाभूतों की पूजा की जाती है। पत्थर को भी ईश्वर मानने वाला मनुष्य किसी और का अहित नहीं कर सकता। महात्मा बुद्ध ने मानवता का महत्व बताकर, अष्टांग मार्ग के माध्यम से दुःख के निराकरण का मार्ग बताया है। वेद, भगवतगीता, कुरान, बाईबल, त्रिपिटक आदि धार्मिक ग्रंथ जीवन जीने की शैली सिखाते हैं। जातक कथाएँ, पंचतंत्र की कहानियाँ नैतिकता की सीख देती है। प्रत्येक काल के साहित्यकारों ने अपनी कृतियों में इन जीवन–मूल्यों को प्रेषित कर मानवता, समानता, प्रेम, करुणा, बंधुत्व आदि भावों का पोषण किया। भारत देश इन संतों की भूमि रही है। संतों ने अपनी वाणी से इस देश को भारतीयता के मूल्यों से सींचकर अध्यात्म और दर्शन द्वारा मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। आदिकाल में साहित्यकारों ने चरितकाव्यों के माध्यम से राष्ट्रीयता के बीज बोए परंतु यह राष्ट्रीयता का संकुचित रूप था, केवल उनकी रियासत तक सीमित था।

भक्तिकालीन साहित्य में भक्ति की धारा बही और अध्यात्म के मार्ग से भारतीय जीवन–मूल्यों का संरक्षण किया गया। इस काल में साहित्य के माध्यम से दो विभिन्न संस्कृतियों का मेल किया गया। अपने साहित्य के माध्यम से तुलसीदासजी ने कहा था ''कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई''[1] कीर्ति, कविता और सम्पत्ति वही उत्तम है जो लोकहित में हो। जिस तरह गंगा नदी जहाँ–जहाँ से बहती है, वहाँ–वहाँ सबका कल्याण करती जाती है। अतः साहित्य ऐसा होना चाहिए जो मनुष्य में जीवन–मूल्यों को पिरोकर राष्ट्र को मज़बूत करने की दिशा में काम करता हो। इस काल में नैतिक शिक्षा का विशेष महत्त्व था। संत रामदास ने कर्म का महत्त्व बताते हुए कहा कि,'' आधी ते करावे कर्म / कर्म मार्गे उपासना / उपासका सापड़े ज्ञान / ज्ञाने मोक्ष चि पावणे।।''[2] अर्थात मनुष्य ने सदैव कर्म करते जाना चाहिए क्योंकि कर्म ही उपासना का मार्ग है। जिससे उपासक को ज्ञान की प्राप्ति होती है और ज्ञान से ही मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकता है। संत तुकाराम समानता के संदर्भ कहते है कि ''मुंगी आणि राव। आम्हां सारखाची जीव।।धृ.।।/ गेला मोह आणि आशा। कलिकाळाचा हा फास।।1।।/ सोनें आणि माती। आम्हां समान हे चित्तीं।।2।।/ तुका म्हणे आलें। घरा वैकुंठ सगळे''।।3।।[3] अर्थात जिस तरह चीटी से राजा तक सभी जीव समान है, उसी तरह सोना और मोती का मूल्य भी हमारे लिए समान है। जिस घर में संपूर्ण स्वर्ग अवतरित हुआ हो

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

उसके लिए संपूर्ण विश्व ही एक समान होगा। इस काल में नीतिगत शिक्षा के माध्यम से जीवन मूल्यों को सामान्य जन में प्रसारित करने का कार्य किया गया।

विभिन्न काल में हमारे संतो और साहित्यकारों ने भारतीयता के जीवन–मूल्यों को अपने साहित्य में पिरोकर नैतिकता का संदेश दिया है। जब–जब देश की जनता अंधविश्वास, कुरीति, बुराई की ओर अग्रसर हुई तब–तब साहित्यकारों ने मानव–कल्याण को महत्व देकर समता, बंधुता के मार्ग का अनुसरण कर सबको नई दिशा दी। प्रारंभिक काल से लेकर रीतिकाल तक साहित्यकारों ने इन जीवन–मूल्यों को अपनाया। इसके बावजूद देश में भारतीयता के जीवन–मूल्य तो थे लेकिन भारतीयता नहीं थी क्योंकि देश कई रियासतों में बँटा था। रियासतों में बँटे देश की प्रजा के लिए उनकी रियासत ही उनका देश था। उनकी देशभक्ति उनके रियासत तक ही सीमित थी। प्रजा वर्णव्यवस्था के जाल में ऐसी उलझी कि कभी एक नहीं हो पायी। इस अनेकता के कारण ही इस देश पर कई विदेशी ताकतों की सत्ता रही परंतु इस भूमि की एक विशेषता यह भी रही कि जो भी यहाँ आया इस मिट्टी को उसने अपनाया और यही का हो गया। इसी कारण इस देश में विविध जाति, धर्म, पंथ, वर्ण के लोग बसते हैं।

रीतिकाल में अंग्रेजों, फ्रांसीसियों, पुर्तगालियों ने इस देश पर अपनी सत्ता स्थापित की। वे आए तो इस देश में व्यापार करने परंतु यहाँ के सत्ताधीश बन गए, जिसका मूल कारण था हमारे देश के लोग जाति, धर्म, वर्ग, पंथ में बँटे हुए थे। उनकी इसी अनेकता का लाभ उठाकर, 'फूट डालो राज करो' की नीति अपनाकर इन विदेशी शासकों ने इस देश को गुलाम बनाया। इन गुलाम लोगों को भारतीय होने का अहसास दिलाया। उनके स्वाभिमान, आत्मसम्मान को झकझोरा। रियासतों में बँटे इस देश को भारत के रूप में पुनः एक सूत्र में बाँधकर हम सब को भारतीय होने का गौरव प्रदान किया। जब हमें यह एहसास हुआ कि हम सभी भारतीय हैं तब 1857 ई. में अंग्रेजों के ख़िलाफ आज़ादी की पहली लड़ाई बहादुरशाह जफर, रानी लक्ष्मीबाई, नानासाहेब पेशवा, अंग्रेजों के अधीन भारतीय सिपाहियों की विद्रोही सेना के द्वारा संयुक्त रूप से लड़ी गई। इस लड़ाई में भले ही भारतीयों की हार हुई, परंतु इस लड़ाई ने हिन्दू हो या मुस्लिम या किसी अन्य वर्ग, पंथ सभी को भारतीय होने का एहसास दिलाया। उन्हें यह महसूस कराया कि हम अलग–अलग रियासतों के नहीं इस भारत भूमि के नागरिक हैं।

अंग्रेजों के सत्ताधीश होने पर उन्हें यह देश चलाने के लिए शिक्षित लोगों की आवश्यकता होने लगी, फलस्वरूप उन्होंने शिक्षा का मार्ग सभी के लिए खोल दिया। जो शिक्षा भारत में कभी केवल एक वर्ग तक सीमित थी, वह सभी

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

जाति, धर्म, पंथ के लिए खोल दिए गए। जब यह लोग उच्च शिक्षा हेतु विदेश गए तब उन्हें यह एहसास हुआ कि वे कितने पिछड़े हुए हैं। जब वे भारत लौटे तो उन्होंने कई सुधारवादी आंदोलन चलाए। कई बुराइयाँ, कुरीतियों का विरोध किया। इन सुधारवादी आंदोलन में राजाराम मोहन रॉय, न्यायमूर्ति रानडे, महात्मा ज्योतिबा फुले, डॉ. आंबेडकर आदि प्रमुख थे। इस सुधारवादी परिवर्तन की धारा पर भारतीय साहित्यकारों ने अपनी कलम चलाई। सियारामशरण गुप्त अपनी कविता 'एक फूल की चाह' में 'छुआछूत' की समस्या का प्रखरता से विरोध करते हुए कहते है कि ''पापी ने मंदिर में घुसकर/किया अनर्थ बड़ा भारी/कलुषित कर दी है मंदिर की/चिरकालिक शुचिता सारी।/ऐ, क्या मेरा कलुष बडा है/देवी की गरिमा से भी,/किसी बात में हूँ मैं आगे/माता के महिमा के भी/माँ के भक्त हुए तुम कैसे/करके यह विचार खोटा?/माँ के सम्मुख ही माँ का तुम/गौरव करते हो छोटा''[4] जनता में राष्ट्रीयता के बीज बोने में पत्रकारिता का विशेष महत्त्व रहा है। बंगाल में प्रकाशित 'बंगाल गजट' अर्थात 'हिक्की गज़ट' अखबार के संपादक जेम्स ऑगस्ट हिक्की जो स्वयं ब्रिटिश नागरिक थे। पत्रकारिता को ही अपना धर्म एवं कर्म समझकर उन्होंने अंग्रेजों की नीतियों के ख़िलाफ अपने अखबार के माध्यम से आवाज़ बुलंद की। भले ही उन पर कई प्रतिबंध लगाए गए परंतु उन्होंने अपनी आवाज़ को मुखर ही रखा। उनकी इसी निर्भयता ने भारतीय पत्रकारों को नई दिशा दी। जो आवाज़ 1857 ई. की लड़ाई में कहीं दब गई थी, स्वाधीनता का स्वर सुप्त रूप में रहने वाले भारतीयों के मन में था। उस स्वर को इस अखबार ने हवा दी। भारतीय पत्रकारों और साहित्यकारों के डर को समाप्त किया। उनके स्वाभिमान, आत्मसम्मान को जगाकर उन्हें भारतीय होने का अहसास दिलाया। जहाँ उन्होंने अपने लेख, कहानी, निबंध, काव्य, प्रहसनों के माध्यम से भारतीयता के स्वर को बुलंद किया।

बालमुकुंद गुप्त ने 'शिवशंभु के चिट्ठे' प्रसिद्ध व्यंग्य लेख के माध्यम से ब्रिटिश शासकों पर तीखा प्रहार किया। लोगों के भीतर आज़ादी के बीज बोने हेतु हमारे स्वतंत्रता सेनानी प्रयास कर रहे थे तो दूसरी ओर अधिकतर भारतीय साहित्यकार अपनी लेखनी से जनता में जनजागरण कर रहे थे। अधिकांश साहित्यकारों की रचनाएँ राष्ट्रीय चेतना तथा समाज सुधार पर आधारित थी। जैसे जयशंकर प्रसाद रचित नाटक 'चंद्रगुप्त', मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती', सियाराम गुप्त की 'एक फूल की चाह' भारतेंदु हरिश्चंद्र की 'भारत दुर्दशा', सुभद्राकुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का 'पराजय गीत', रामनरेश त्रिपाठी का 'मानसी' काव्य संग्रह, रामधारीसिंह दिनकर की अधिकांश रचनाएँ जैसे 'कुरुक्षेत्र', 'हुँकार' आदि राष्ट्रप्रेम तथा जनजागरण

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

से भरी हैं। बंगाली साहित्यकारों में रवींद्रनाथ ठाकुर, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, डी. एल. रॉय आदि साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं से देश को नई दिशा दी। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की रचना 'वंदेमातरम' राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रभक्ति का अप्रतिम उदाहरण है। मराठी साहित्यकारों में केशवसूत, वीर सावरकर, कुसुमाग्रज की अधिकतर रचनाएँ भारतीयता के मूल्यों को ही आत्मसात करती हैं। 'क्रांतीचा जयजयकार' इस कविता के माध्यम से एक राजबंदी के मन में व्यक्त विचारों को अभिव्यक्त किया है–"कशास आई, भिजविसि डोळे, उजळ तुझे भाल/रात्री[redacted]त उद्याचा असे उषःकाल/ सरणावरती आज आमुची पेटतात प्रेते/ उठतिल त्या ज्वालांतुन भावी क्रांतीचे नेते/ लोहदण्ड तव पायांमधले खळाखळा तुटणार/ आई, खळाखळा तुटणार/ गर्जा जयजयकार क्रांतिचा गर्जा जयजयकार"[6]

अर्थात वह राजबंदी अपनी माँ से कहता है कि हे माँ! अपनी आँखों में आँसू क्यों लाती हो? आप गर्व करो। अंधकार के गर्भ से कल की सुबह आएगी। जब हमारी आहुति दी जाएगी तब उसकी ज्वाला से क्रांति के नए नेताओं का जन्म होगा। गुलामी की बेड़ियाँ, जो हमारे पैरों में हैं वह टूटेंगी। क्रांति का जयघोष होगा। हम यह बात जानते हैं जब हमारे प्रेरक क्रांतिकारी भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु को जब फाँसी दी गई, तब उनके इस बलिदान से देश के नवयुवकों में क्रांति की ऐसी चिंगारी जली कि जिसकी अग्नि में ब्रिटिश साम्राज्य भस्म हो गया।

मैथिलीशरण ने 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से मानवता को अभिव्यक्त करते हुए कहा है–"'मनुष्य मात्र बंधु है' यही बड़ा विवेक है,/ पुराणपुरूष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।/ फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद है/ परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद है।/ अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,/ वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।"[7] स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में किस तरह विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग, पंथ के लोगों ने अपने आप को भूलकर केवल यह याद रखा कि मैं भारतीय हूँ। उस दृष्टि से प्रयास कर मिलजुलकर, एकदूसरे का [redacted]कर, कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। असंभव सी प्रतीत होने वाली अपनी आज़ादी को प्राप्त कर इस देश में लोकतंत्र स्थापित किया।

आज़ादी के संघर्ष के दौरान हम भारतवासियों ने बड़े ही सुंदर सुनहरे सपने देखे। जब देश आज़ाद होगा, तब इस देश में रामराज्य स्थापित होगा। चारों तरफ खुशहाली होगी। इस देश में अमन–चैन स्थापित होगा। अभिव्यक्ति की आज़ादी होगी। तब हम बड़े गर्व से, अपने अधिकार से, स्वाभिमान के साथ, आत्मविश्वास के साथ एक स्वर में कह सकेंगे कि हम आज़ाद हैं। यह हमारी

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

भारत भूमि है, जिस पर हमें गर्व है। परंतु रामराज्य की कल्पना, कल्पना ही रह गई और मोहभंग की स्थिति का निर्माण हुआ। देश भ्रष्टाचार में लिप्त हो गया। जो नेता कभी हमारे आदर्श थे, वे ही कमजोर और भ्रष्ट हो गए। जैसे ही यह देश आज़ाद हुआ, यह मुल्क दो हिस्सों में बँट गया। एक भारत बना तो दूसरा पाकिस्तान। यह विभाजन अपने साथ भीषण हिंसा और रक्तपात लाया। कत्लेआम में हजारों लोग मारे गए, लाखों लोगों को अपना घर–बार, कारोबार छोड़कर अनजान स्थानों पर जाना पड़ा। विभाजन की इस त्रासदी को यशपाल ने अपने उपन्यास 'झूठा सच' और भीष्म साहनी ने 'तमस' में दर्शाया है। जो लोग एक–दूसरे से कंधे से कंधा मिलाकर आज़ादी की लड़ाई लड़े थे, वे एक–दूसरे के खून के प्यासे हो गए, एक–दूसरे को शक की निगाहों से देखने लगे, आज भी शक की यह स्थिति हमें दिखाई देती है।"

1962 में चीन ने 'हिन्दी–चीनी भाई–भाई' का नारा लगाकर हमारी पीठ पर खंजर घोंपा। हम पर आक्रमण किया। इस दौर में हमारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से पुनः देशभक्ति का बीज बोया। हमारे राष्ट्रसंतों ने अपने भजनों द्वारा भारतीयता की लौ जगाई। राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज ने सरहद पर भारतीय सिपाहियों के समक्ष भजन गाते हुए कहा–"आओ चीनियों, मैदान में, देखो हिंद का हाथ।/ अब हिंद जाग गया तुम्हारे साथ।।/ भारत से लड़नेवाले हो? ईश्वर से जरा तो डरो।/ अरे सुन लो।/ क्यों संसार दुखाते हो? शांति भंग करवाते।/ सब देश को क्रोध चढ़ाकर, अपना नाश कराते हो।"[7]

हमारे देश में कई विदेशी शासक आए। आर्य हो या यूनानी, चाहे मुगल हो या ब्रिटिश, चाहे फ्रांसीसी हो या पुर्तगाली जो भी यहाँ आया यहीं का हो गया। जो यहाँ आकर यही बस गया, वो ही भारतीय कहलाया। परंतु आज मनुष्य, मनुष्य में ही भेद किया जा रहा। उन्हें विभिन्न आधारों पर चाहे जातिगत हो या धर्मगत, चाहे भौगोलिक हो या भाषागत बाँटा जा रहा। मनुष्यता का भाव कहीं खो गया ऐसा महसूस होने लगा। अहिंसा के स्थान पर हिंसा बढ़ने लगी। मनुष्य से अधिक पशु को महत्त्व दिया जाने लगा। देशभक्त और देशद्रोही के संबंध में सकारात्मक कम और नकारात्मक चर्चा और अधिक छिड़ने लगी। ऐसा लगने लगा कि देश दिशाहीन होने लगा है। इस स्थिति को व्यक्त करते हुए कृष्णा सोबती ने 30 जून 2017 के 'शब्दांकन' वेब पत्रिका 'हशमत' में हशमतीय शैली में कहा–" वैदिक है क्रांति'– क्रांति/भारत में क्रांति/नहीं है यह कोई भ्रांति/यह महान धारणा है/ वैदिक क्रांति/गायों को बचाओं/ और नागरिकों को मारो/हिंदुत्व की क्रांति–और न कचहरी/न पुलिस/इत्ते अच्छे दिन/इस देश पर/फिर कब आवेंगे।" हम यह जानते हैं जब भी समय आया साहित्यकारों

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

ने अपनी भूमिका को बखूबी निभाया है। निर्भयता से बेखौफ होकर उन्होंने सरकार के खिलाफ़ अपनी आवाज़ बुलंद की। चाहे आज़ादी का दौर हो, चाहे युद्ध का वातावरण, साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से इस देश को नई दिशा दी। वर्तमान में साहित्यकारों को पुनः उस दिशा में बढ़ना होगा, पुनः भारतीयता के बीज बोने होंगे। पुनः अतियथार्थवाद, मनोवैज्ञानिकतावाद, अश्लीलता से बाहर निकलकर आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद को अपनाना होगा। अपने साहित्य के द्वारा दिशाहीन नवयुवकों को सही दिशा देकर, उन्हें जागरूक कर इस देश के विकास में सहयोग करना होगा। जाति, धर्म, वर्ग, पंथ से उठकर उन्हें मानव होने का एहसास दिलाना होगा। मनुष्य को मनुष्य बनाना होगा तभी यह देश महान बन सकता है। देश की महानता देश की जनता पर निर्भर है। साहित्यकार जनता को जागरूक बनाता है, मनुष्य बनाता है, और इस देश को भारतीयता की माला में पिरोकर महान बनाने में योगदान दे सकता है।

## संदर्भ


1. हनुमानप्रसाद पोद्दार, श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड, गोरखपुर, गीताप्रेस, उनतीसवॉं पुनर्मुद्रण, सं. 2068, पृ.क्रं. 17
2. संपादन डॉ. शरयू तायवाड़े,डॉ. राजेंद्र वाटाणे, डॉ. कोमल ठाकरे, युगप्रवर्तक संत तुकाराम रामदास, रामदासाची व्यावहारिक शिकवण (डॉ.कृष्णराव साकुळकर), नागपुर, विजय प्रकाशन, प्रथमावृत्तिः 12 दिसंबर 2010, पृ. क्रं. 185
3. लेखक डॉ. किशोर सानपे, प्रा. मनोज तायड़े, तुकाराम व्यक्तित्व आणि कवित्व, मुंबई, लोकवाङ्मय गृह, चौथी आवृत्ति, ऑगस्ट 2001, पृ. क्रं. 99–100
4. स्पर्श भाग 1, सियारामशरण गुप्त, एक फूल की चाह, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद 2006, नई दिल्ली, संस्करण दिसंबर 2015, पृष्ठ क्रं. 106–107
5. संपादक बा. भ. बोरकर, शंकर वि. वैद्य, रसयात्रा (कुसुमाग्रज), पुणे, कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, प्रथम आवृत्ति, 1969, पृ. क्रं. 69
6. स्पर्श भाग–2, मैथिलीशरण गुप्त, मनुष्यता, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद 2007, नई दिल्ली, संस्करण दिसंबर 2015, पृष्ठ क्रं. 21
7. संपादन प्रो. डॉ. माया सिंह, काव्य कुसुम काव्य संग्रह, पुष्प की अभिलाषा (माखनलाल चतुर्वेदी), इलाहाबाद, जयभारती प्रकाशन, संस्करणः 2006, पृ. क्रं. 11,



डी.एम.डब्ल्यू.पी.डब्ल्यू.एस.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
कामठी मार्ग, टेका नाका, नागपुर–26
मो.नं. 9921286071
ईमेल : sumedh2911@gmail.com


Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner